अप्रैल-2013 ◆ वर्ष 1 ◆ अंक 11 ◆ उदयपुर

ओ३म्

सत्यार्थ सौरभ

अप्रैल -२०१३

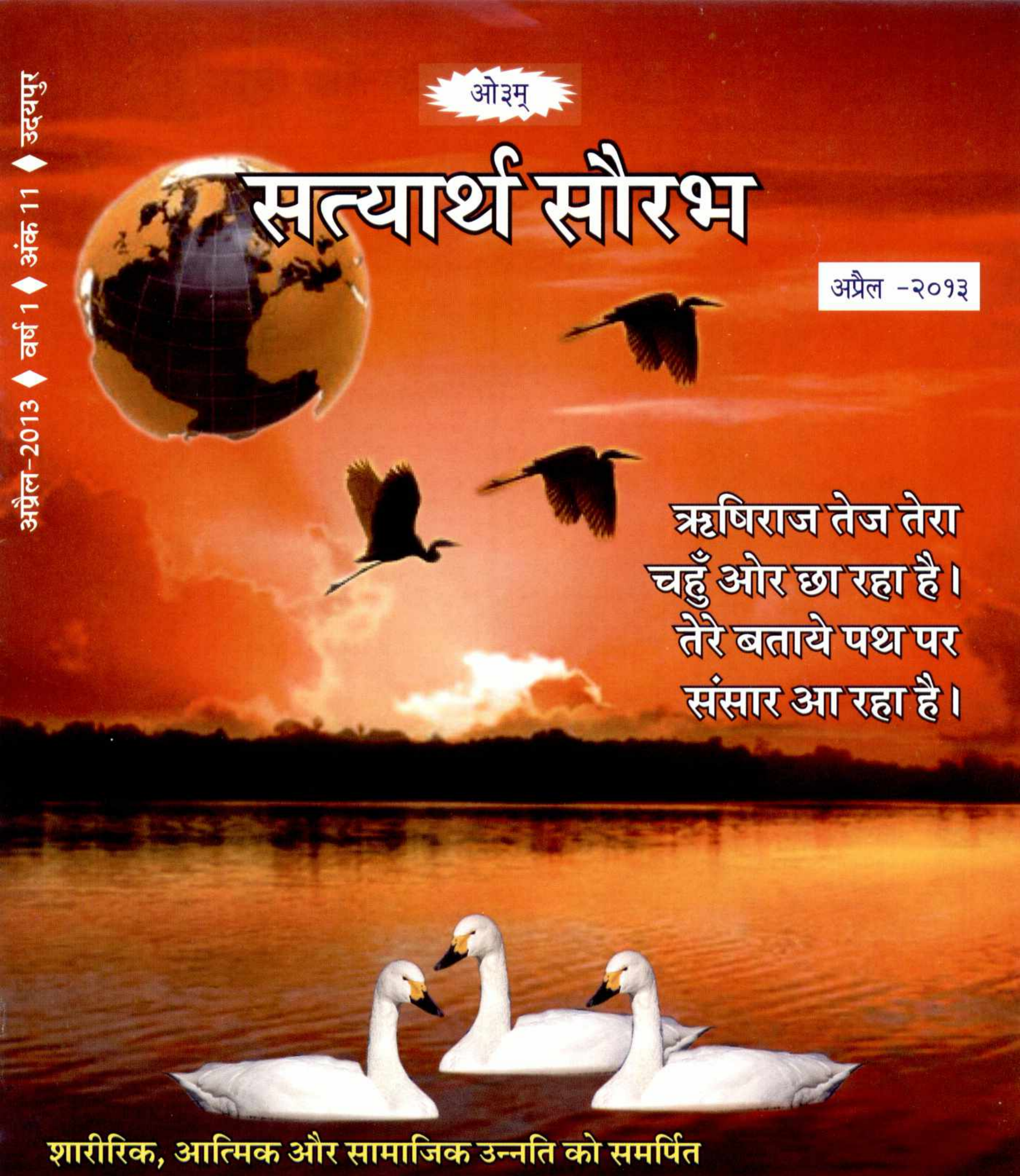

ऋषिराज तेज तेरा
चहुँ ओर छा रहा है।
तेरे बताये पथ पर
संसार आ रहा है।

शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति को समर्पित

श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास
नवलखा महल परिसर, गुलाब बाग, महर्षि दयानन्द मार्ग,
उदयपुर-313001 (राज.)

₹ १० १६

च्यवनप्राश की तरह नहीं है दवाई,
आंवला प्राश तो है सेहत भरी मिठाई।
खाते रहें पूरे साल,
गर्मी-सर्दी का न करें खयाल।
100% शाकाहारी कोलैस्ट्रोल फ्री।
विटामिन 'सी' से भरपूर
M D H
Amla Prash
Rich in VITAMIN 'C'
FREE
MDH
Chunky Chat masala
एम डी एच
आंवला प्राश
विटामिन C से भरपूर
FREE
50g MDH CHUNKY CHAT masala Worth ₹ 23/- with this JAR
बच्चे और बड़े ब्रेड व रोटी पर जैम की तरह लगा कर खा सकते हैं।
स्वाद भी-स्वास्थ्य भी
आंवला प्राश
CHOLESTEROL FREE
परिवार के बुजुर्ग रात को सोने से पहले एक चम्मच खायें और फर्क देखें।
365 दिन खायें!
रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाता है।
महाशियाँ दी हट्टी (प्रा०) लिमिटेड
ESTD. 1919
9/44, कीर्ति नगर, नई दिल्ली - 110015
Website : www.mdhspices.com

सत्यार्थ प्रकाश की शिक्षाओं को अपने आँचल में समेटे, सम्पूर्ण परिवार के लिए, हर आयु समूह के लिए, पठनीय और समर्पित

न्यास का मासिक मुखपत्र

सत्यार्थ सौरभ

प्रमुख संरक्षक - सत्यार्थ-सौरभ

महाशय धर्मपाल जी (एम.डी.एच.)
डॉ. सुखदेव चन्द सोनी (अमेरिका)

परामर्शदाता संपादक मण्डल

डॉ. महावीर मीमांसक
आचार्य वेदप्रकाश श्रोत्रिय
डॉ. ज्वलंत कुमार शास्त्री
डॉ.सोमदेव शास्त्री
डॉ. रघुवीर वेदालंकार
आचार्य वेदप्रिय शास्त्री

सम्पादक

अशोक आर्य

प्रबन्ध सम्पादक

भवानी दास आर्य

प्रबन्ध सहयोग

नवनीत आर्य

व्यवस्थापक

सुरेश पाटोदी (मो.9829063110)

सहयोग ◆ भारत	विदेश
संरक्षक - ११००० रु.	$ 1000
आजीवन - १००० रु.	$ 250
पंचवर्षीय - ४०० रु.	$ 100
वार्षिक - १०० रु.	$ 25
एक प्रति - १० रु.	$ 5

भुगतान राशि धनादेश/चैक/ड्राफ्ट
श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास
के पक्ष में बना न्यास के पते पर भेजें।
अथवा यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया, उदयपुर
खाता संख्या : ३१०१०२०१००४१५१८
IFSC CODE- UBIN 0531014
में जमा करा अवश्य सूचित करें।

सृष्टि संवत्
१९६०८५३११४
चैत्र कृष्ण द्वादशी
विक्रम संवत्
२०७०
दयानन्दाब्द
१८९

सत्यार्थ-सौरभ में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी विवाद के प्रतिवाद हेतु न्यायक्षेत्र उदयपुर ही होगा। आपत्ति की अवधि प्रकाशन तिथि से एक माह के भीतर ही मानी जायेगी।

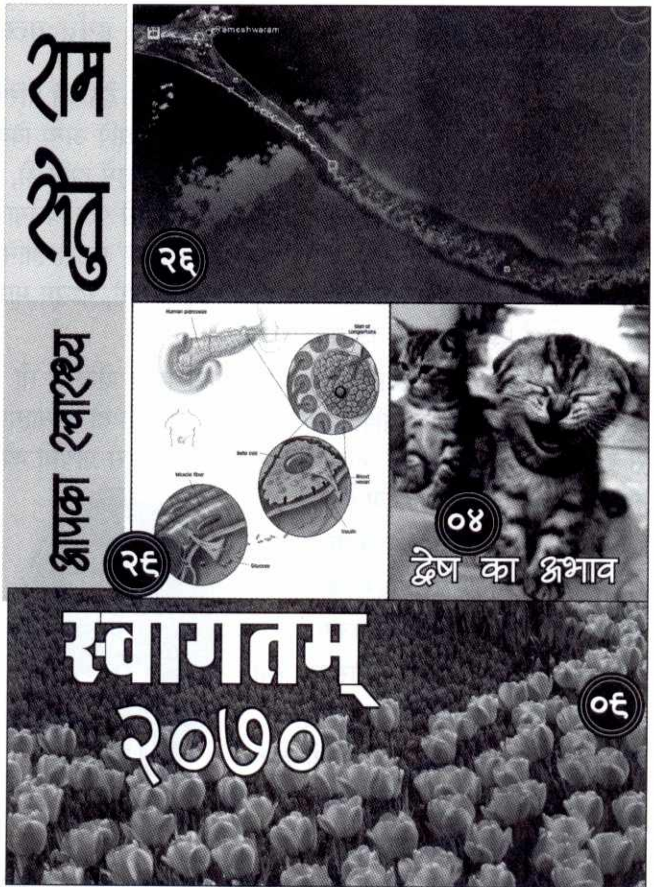

April - 2013

विज्ञापन शुल्क (प्रति अंक)
कवर २ व ३ (भीतरी आवरण) रंगीन
३५०० रु.
अन्दर पृष्ठ (श्वेत-श्याम)

पूरा पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	२००० रु.
आधा पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	१००० रु.
चौथाई पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	७५० रु.

समाचार २२

हलचल २३

०७ श्री रामसेतुः आस्था नहीं इतिहास
११ आर्य समाज-स्वाभिमान का उदय
१३ दयानन्द सूक्ति संग्रह
१४ आर्य पुत्री...
१६ ईसाई धर्म सुधारक-मार्टिन लूथर
१८ रामायण की पृष्ठ भूमि
२१ अतिथि यज्ञ
२४ सत्यार्थ पीयूष
३० तत्त्वमसि

स्वामी श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास
नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर

वर्ष - १ अंक - ११

मुद्रण द्वारा - चौधरी ऑफसेट, (प्रा.लि.)
११-१२, गुरु रामदास कॉलोनी, उदयपुर

प्रकाशक
श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास
नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर (राजस्थान) ३१३००१
(०२९४) २४१७६९४ , ९३१४५३५३७९, ९८२८६२६७४७
www.satyarthprakashnyas.org, E-mail : satyarthsandesh@gmail.com

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित तथा कार्यालय श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास नवलखा महल गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर-313001 से प्रकाशित, सम्पादक-अशोक कुमार आर्य

ओ३म्

वेद सुधा

द्वेष का अभावः आध्यात्मिकता की चरमसीमा

सहृदयं सांमनस्यमविद्वेषं कृणोमि वः।
अन्यो अन्यमभि हर्यत वत्सं जातमिवाघ्न्या।। - अथर्व० ३/३०/१

गतांक से आगे ....

मन्त्र में द्वेष से बचने का उपदेश दिया गया है। जैसाकि द्वेष की परिभाषा की गई है जिस व्यक्ति अथवा वस्तु से दुःख की प्राप्ति हो उससे परे हटने की इच्छा का नाम द्वेष है। यद्यपि अन्य विकारों से ऊपर उठना भी मनुष्य के लिए बहुत परिश्रम साध्य है परन्तु द्वेष को छोड़ना बहुत कठिन है। जिससे हमें हानि हो, उससे परे रहने की इच्छा भी हम मन में न लाएँ- यह बड़ा कठिन काम है। गम्भीरतापूर्वक विचार करने से हमें पता चलेगा कि वास्तव में यह बड़ा कठिन काम है। द्वेष से ऊपर उठने के लिए बड़ी साधना की आवश्यकता है। जिससे हमारी हानि अथवा अपमान हुआ हो उसके प्रति किये जानेवाले व्यवहार को हम तीन मार्गों में बाँट सकते है- निकृष्ट मार्ग, मध्यम मार्ग और उत्तम मार्ग। सामान्यजन निकृष्ट कोटि का मार्ग ही अपनाते हैं। इस मार्ग की कई पगडण्डियाँ हैं।

जब मनुष्य को किसी से मान-हानि अथवा अर्थ-हानि होती है तो वह सामान्यतः 'निकृष्ट मार्ग' की पगडण्डियों को ही अपनाता है। वही सन्तप्त व्यक्ति जब एकान्त में बैठता है तो परमात्मा से उसके विनाश की प्रार्थना करता है। किसी कवि ने इस प्रार्थना को सुन्दर रूप में अभिव्यक्त किया है-

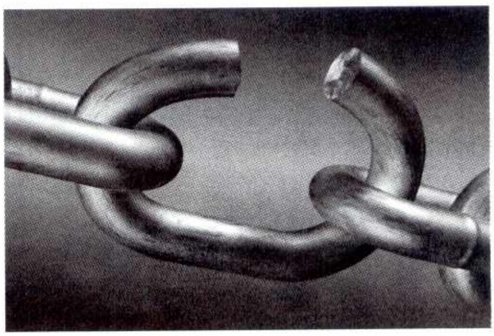

माँगी किसी कुम्हार ने एक रोज़ यह दुआ,
घोड़ा मेरे पड़ोसी का मर जाए ऐ खुदा !
घोड़ा तो खैर थान पर वैसे बँधा रहा,
लेकिन गधा कुम्हार का अफ़सोस मर गया।
यह देखकर कुम्हार निहायत खफ़ा हुआ,
रखकर जिगर पे हाथ वो बोला कि ऐ खुदा !
मुद्दत खुदाई करते हुए तुझको हो गई,
लेकिन तमीज़ घोड़े-गधे की नहीं रही।

इस प्रकार मनुष्य अपने विरोधी के विनाश की प्रार्थना परमात्मा से करता है। इस प्रकार की प्रार्थना करना सर्वथा अनुचित है। इस निकृष्ट मार्ग की दूसरी पगडण्डी मनुष्य यह अपनाता है कि वह अपनी दुःखभरी गाथा दूसरों को सुनाता फिरता है-

किस्सा-ए-दर्द सुनाते हैं कि मजबूर हैं हम।

जो बहुत गम्भीर व्यक्ति हैं, वे अपने दुःख को दूसरों के सम्मुख नहीं कहते-

ऐ गाफिलो ! कहने से न कहना अच्छा।

इसी स्थिति की ओर संकेत करते हुए कवि ने कहा है-

तुम अपने सुख दुःख की गाथा, बस अपने तक ही रक्खो सीमित।

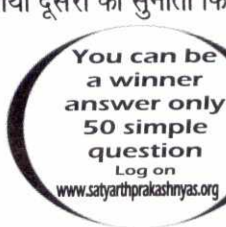

अपने सुख-दुःख की कहानी अपने तक ही सीमित रखो, क्योंकि जब व्यक्ति अपने दुःख की कहानी दूसरों को सुनाता है तो निश्चय ही अपने दुःख देने वाले व्यक्ति के प्रति उसके मन में दुर्भाव आता है। इससे द्वेष की भावना मन में स्थान बना लेती है।

इसी निकृष्ट मार्ग की तीसरी पगडण्डी मनुष्य निन्दा, आलोचना, उपहास और अपमान के रूप में अपनाता है। जिस व्यक्ति से मनुष्य को कोई हानि पहुँचती है, स्वाभाविक है कि हानि पहुँचानेवाले के प्रति उसके मन में दुःख होगा। उस दुःख की अभिव्यक्ति मनुष्य उस व्यक्ति की निन्दा के रूप में करता है। निन्दा का अर्थ है कि उस व्यक्ति के गुणों को भी दोष बताना। उसकी निन्दा, आलोचना, उपहास और अपमान के द्वारा वह अपने मन के रोष को शान्त करता है।

द्वेष अपना रूप इस प्रकार दिखाता है कि यदि वह हानि पहुँचाने वाला अथवा अपमान करने वाला कहीं मिल गया तो वह व्यक्ति उसकी गर्दन को इस प्रकार पकड़ता है जैसे बिल्ली चूहे की गर्दन को पकड़ती है, ताकि उसे जीवनभर स्मरण रहे कि उसने किसी को हानि पहुँचाई थी और उसके बदले में अपमान सहना पड़ा था।

भाषणदाताओं के पास द्वेष की पूर्ति का एक और उपाय होता है। वे अपने भाषणों में ही उस व्यक्ति को भरे समूह में कटाक्षों द्वारा अपमानित करने का रास्ता निकाल लेते हैं।

स्वयं प्रहार करने से यदि तृप्ति न हुई तो किसी प्रवक्ता को प्रहार करने के लिए संकेत कर दिया। वही अपने भाषण द्वारा इस कार्य को करता है। द्वेष एक यह रास्ता भी निकाल लेता है। इतने से भी सन्तुष्टि न हुई तो उस व्यक्ति के विरुद्ध झूठी खबरें ही उड़ा दो। जो दुगुर्ण एवं दुर्व्यसन उस व्यक्तित्व में नहीं हैं, वे भी उसके पल्ले मढ़ दो ताकि उसका व्यक्तित्व इसी से ही दूषित एवं लांछित हो। और कुछ नहीं तो जिस व्यक्ति के साथ उसकी बिगड़ गई अथवा बिगड़ी हुई है, उसके विरुद्ध कुछ गलत-सलत कहकर उनके सम्बन्धों को और भी खराब करने का प्रयत्न करना द्वेष का ही काम है।

यदि उस व्यक्ति का अपमान हो जाए अथवा उसकी अर्थ-हानि हो जाए तो उस हानि में प्रसन्नता का अनुभव करना, यह भी द्वेष का लक्षण है।

मान-हानि अथवा अर्थ-हानि के कारण यदि हम उस व्यक्ति से रुष्ट हैं तो उसका बनता हुआ काम बिगाड़ना, यह भी द्वेष का परिणाम है। उसके बनते हुए काम में लात मारकर प्रसन्नता का अनुभव करना भी द्वेष को सिद्ध करता है।

यदि वह व्यक्ति अपने किसी कार्य के निमित्त आये तो उसका कार्य न करना, यह भी द्वेष का एक रूप है। इस दुर्बलता से ऊँचा उठने के लिए बड़े भारी आत्मिक बल की आवश्यकता है।

जिससे हमारी आर्थिक हानि अथवा मान-हानि होती है, उसके प्रति हम तृतीय मार्ग की उपर्युक्त पगडण्डियाँ अपनाते हैं। ये पगडण्डियाँ मानसिक निकृष्टता के कारण ही अपनाई जाती हैं। आध्यात्मिक उन्नति के अभाव में भावात्मक श्रेष्ठता न होने पर ही मनुष्य इस प्रकार के मार्गों को अपनाता है। इन मार्गों को अपनाने से मनुष्य का भावात्मक दृष्टि से पतन होता है। ऐसे व्यक्ति के अन्दर किसी प्रकार की उत्कृष्टता के दर्शन नहीं हो पाते। संसार में इस प्रकार का आचरण करने वाले व्यक्ति प्रायः आपको मिलेंगे।

परन्तु इस मार्ग से भिन्न एक और मार्ग भी है। मैं उसे 'मध्यम मार्ग' के नाम से पुकारता हूँ। जिन्होंने आध्यात्मिक उन्नति के द्वारा अपना भावात्मक परिष्कार किया हैं, वे इसी मार्ग को अपनाते हैं। इस मार्ग की भी कुछ पगडण्डियाँ हैं।

जब किसी व्यक्ति की किसी से अर्थ-हानि अथवा मान-हानि हो जाती है तो वह मध्यम मार्ग की पहली पगडण्डी यह अपनाता है कि उस भाव को मन में रख लेता है। वह किसी से इसका वर्णन नहीं करता। यह गम्भीरता की मानो पराकाष्ठा होती है। ऐसा गम्भीर एवं आध्यात्मिक व्यक्ति निकृष्ट मार्ग को न अपनाकर मध्यम मार्ग की पगडण्डियों को अपनाता है। वह व्यक्ति-व्यक्ति को अपनी दुःख-भरी कथा-गाथा नहीं सुनाता।

यदि वह व्यक्ति मिल जाए तो वह उसे कह देता है कि तुमने मेरे साथ अच्छा नहीं किया। वह अपना गिला और उलाहना उसे दे देता है। यदि अपराध कुछ अधिक हुआ तो वह कुछ कठोर शब्दों को अपनाकर अपना गिला-शिकवा प्रकट कर देता है। यदि उस व्यक्ति में श्रेष्ठता होती है तो वह अपनी त्रुटि स्वीकार कर लेता है। यदि वह अपनी त्रुटि स्वीकार कर लेता है तो ठीक है, अन्यथा दूसरे व्यक्ति के मन का बोझ हल्का हो ही जाता है। मन के बोझ का हल्का होना ही अपने-आप में एक उपलब्धि है, क्योंकि वह निकृष्ट मार्ग पर चलने से बच जाता है। इसके पश्चात् आध्यात्मिक व्यक्ति को उस व्यक्ति के प्रति कोई दुर्भाव नहीं रखना चाहिए। यदि अपराध कुछ अधिक हो तो किसी के द्वारा रोष प्रकट कर देना चाहिए। किसी व्यक्ति के द्वारा रोष-सन्देश भेजने पर यदि वह व्यक्ति आकर अनुनय-विनय कर ले और अपना अपराध स्वीकार करे तो उसकी श्रेष्ठता है। इसके पश्चात् उसके लिए मन में कोई दुर्भाव नहीं रखना चाहिए। यदि वह आकर अनुनय-विनय न करे और खेद

प्रकट न करे तो यह उसकी निकृष्टता है।

यदि ऐसा व्यक्ति अनुनय-विनय नहीं करता तो फिर इस प्रकार के व्यक्ति से नमो-नमस्ते का सम्बन्ध तोड़ देना चाहिए। ऐसे व्यक्ति के साथ बोल-चाल भी बन्द कर देनी चाहिए। नमो-नमस्ते का सम्बन्ध और वार्तालाप के तोड़ने के पीछे अभिप्राय केवल सुधार का होना चाहिए।

ये मध्यम मार्ग की पगडण्डियाँ हैं। ये उपाय भी सांसारिकता और दुनियादारी के नाते ही हैं और इनको अपनाए बिना भी कार्य नहीं चलता, **क्योंकि यदि ये उपाय न अपनाए जाएँ तो उच्छृंखल व्यक्तियों की उच्छृंखलता तो और भी बढ़ जाए।** आध्यात्मिक दृष्टि से उन्नत व्यक्ति यही पगडण्डियाँ अपनाते हैं, परन्तु इससे भी ऊँचा एक और मार्ग है। उसे 'उत्तम मार्ग' कहना चाहिए। यह महापुरुषों का मार्ग है। वे इन दोनों मार्गों से परे एक अन्य मार्ग का अनुसरण करते हैं जिसका अनुसरण केवल वही कर सकते हैं।

बस, उनका केवल एक ही मार्ग होता है- **भूल जाना**। वे दूसरे के किए अपकार का स्मरण ही नहीं करते। वे उसे भूल जाते हैं। उनके मस्तिष्क पर उनके किये हुए दुष्कृत्य का लेशमात्र भी प्रभाव नहीं पड़ता। उन्हें यह स्मरण ही नहीं रहता कि उनके साथ किसी ने दुर्व्यवहार किया है, किसी ने उनकी मान-हानि अथवा अर्थ-हानि की है। यही महापुरुषों का महापुरुषत्व होता है। वे महापुरुष प्रथम मार्ग और द्वितीय मार्ग की पगडण्डियों को नहीं अपनाते। उनको अपनाना उनके स्वभाव के सर्वथा विपरीत होता है। सामान्य व्यक्तियों की तो यही स्थिति होती है-

कहने को तो कहता हूँ कोई गैर नहीं है। पर दिल से मेरे अपना-पराया नहीं जाता।।

परन्तु महापुरुषों की स्थिति इसके सर्वथा विपरीत होती है-

करूँ मैं दुश्मनी किससे कि जब दुश्मन भी हो अपना। मुहब्बत ने जगह छोड़ी नहीं दिल में अदावत की।।

वे अपने शत्रुओं को भी अपना समझते हैं। उनकी दृष्टि में अपने पराये का कोई अन्तर नहीं रहता। सामान्य व्यक्ति का वहाँ तक पहुँचना बहुत कठिन है। इसके लिए अभ्यास की बहुत बड़ी आवश्यकता है। फारसी के कवि ने क्या सुन्दर कहा है-

शुनीदं कि मर्दाने राहे खुदा दिले दुश्मनाँ हम न करदन्द तंग।
तुरा के मयस्सर शवद ई मकाम कि बा दोस्तानत ख़िलाफ़ अस्तो जंग।।

मैंने सुना है ईश्वर के मार्ग पर चलने वाले व्यक्ति दुश्मनों के दिल को भी तंग नहीं करते। तुझे यह स्थिति कहाँ मिलेगी?तेरी तो अपने मित्रों के साथ ही लड़ाई रहती है।

इसी उस स्थिति की अकांक्षा करने वाले व्यक्ति की इच्छा को कवि ने सुन्दर शब्दों में अभिव्यक्ति दी है-

वो कलेजा राम को जो दिया, वो जिगर जो बुद्ध को अता किया।
वो फ़राख़ दिल दयानन्द का, घड़ीभर मुझे भी उधार दे।।

क्रमशः ....

- प्रो. रामविचार
वेद-सन्देश से साभार

सत्यार्थप्रकाश मानक संस्करण की कतिपय विशेषताएँ-

- धर्मार्य सभा के प्रधान आचार्य विशुद्धानन्द जी मिश्र के नेतृत्व में दस विद्वानों की समिति द्वारा तैयार।
- पाठभेद की समस्या का सदैव के लिए निराकरण। मुद्रण भूलों का निराकरण कर परिशिष्ट में आधार की जानकारी भी।
- मानक संस्करण का प्रत्येक पृष्ठ उसी शब्द से प्रारम्भ व समाप्त है जैसा कि मूल सत्यार्थ प्रकाश (१८८४) में है।
- मूल सत्यार्थ प्रकाश (१८८४) सदैव के लिए पाठक के समक्ष उपस्थित रहेगा।
- सुन्दर गेटअप "५.६X९.०" पृष्ठ ६५०, वजन ६०० ग्राम, पेपर बैक।

घाटे की पूर्ति पूर्ववत् दानदाताओं के सहयोग से ही संभव होगी।
आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि सत्यार्थ प्रकाश प्रेमी इस कार्य में आगे आवेंगे।

अब मात्र आधी कीमत में
₹ ४०/-
शीघ्र मंगवाएँ

श्री रामसेतुः आस्था नहीं इतिहास

आर्यावर्त के बारे में महाराज मनु के उद्‌गार प्रसिद्ध हैं -

एतद्देश प्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मनः।
स्वं स्वं चरित्रं शिक्षेरन् पृथिव्यां सर्व मानवाः।

महर्षि दयानन्द ने अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश के ११ वें समुल्लास में लिखा है'यह आर्यावर्त देश ऐसा है, जिसके सदृश भूगोल में दूसरा कोई देश नहीं है। इसीलिए इस भूमि का नाम सुवर्ण भूमि है, क्योंकि यही सुवर्णादि रत्नों को उत्पन्न करती है।(पृ. २७३)

प्रश्न उठता है कि इन उद्‌गारों का आधार क्या था?क्या कोई औपन्यासिक पात्र अथवा आस्था अथवा इतिहास। तनिक विचार करके देखें। आर्यावर्त के इतिहास में पदे पदे उदात्त मानवीय गुणों से सुसज्जित चरित्र इस विश्वास के आधार हैं। आस्था मात्र से इतिहास का निर्माण नहीं होता और औपन्यासिक पात्र अतीव विस्तृत फलक पर समय की सुदीर्घ प्राचीर को चीरकर अपना अस्तित्व कायम नहीं रख सकता। यहाँ इस संक्षिप्त आलेख में मात्र रामायण की चर्चा करेंगे। रामायण के प्रारम्भ में ही जब कविवर महर्षि वाल्मीकि ऐतिहासिक काव्य रचना के उद्देश्य से महर्षि नारद से पूछते हैं कि इस समय फलाँ फलाँ सद्‌गुणों से युक्त कौन नरश्रेष्ठ हैं व उनका क्या चरित्र है? तो बिना किसी हिचक के नारद मुनि श्री राम का नाम लेते हैं। राम के होने का इससे सशक्त क्या प्रमाण हो सकता है? महर्षि दयानन्द भी राम को ऐतिहासिक पुरुष स्वीकार करते हुए सत्यार्थ प्रकाश में लिखते हैं-***'जब रघुगण राजा थे तो रावण भी यहाँ के अधीन था। जब रामचन्द्र जी के समय में विरुद्ध हो गया तो उसको रामचन्द्र ने दण्ड देकर राज्य से नष्ट कर उसके भाई विभीषण को राज्य दिया था।'*** (सत्यार्थ प्रकाश पृ. २७४)

वाल्मीकि रामायण में श्री राम जन्म, राम विवाह, राम वनवास, राज्याभिषेक की महत्वपूर्ण घटनाओं के समय की ग्रहों, नक्षत्रादि की स्थिति तथा युतियों का वर्णन विस्तार से किया है। गणितीय ज्योतिष के अन्तर्गत इस प्रकार के वर्णन काल गणना के आधार बन सकते हैं। हाल ही में अमेरिका में एक साफ्टवेयर 'प्लेटेनेरियम गोल्ड' विकसित किया गया है। भारतीय राजस्व सेवा के अधिकारी श्री पुष्कर भटनागर ने महर्षि वाल्मीकि द्वारा रामायण में मुख्य-मुख्य घटनाओं के समय की ग्रह नक्षत्रादि की उक्त स्थितियाँ इस साफ्टवेयर में डालीं तो क्या परिणाम पाया वह अति संक्षेप में उद्‌धृत है-

श्री राम जन्म- १० जनवरी ५११४ ई.पू., तिथि-चैत्र शुक्ल नवमी समय १२-१ दोपहर। इसी तिथि को सर्वत्र श्री रामजन्म नवमी मनायी जाती है। ऐसी निश्चितता काल्पनिक पात्र के संदर्भ में नहीं हो सकती।

श्री राम वनवास- ५ जनवरी ५०८९ ई.पू.

श्री हनुमान द्वारा सीता सन्धान- १२ सितम्बर ५०७६ ई.पू. शाम ४.१५ बजे। इस प्रकार यह समय श्री वनवास के १३ वर्ष बाद का सिद्ध होता है जो कि सत्य है।

रावण वध- ४ दिसम्बर ५०७६ ई.पू.

राम वनवास सम्पूर्ण- २ जनवरी ५०७५ ई.पू.(साभार- श्री पुष्कर भटनागर)

उक्त पद्धति व निष्कर्ष विचारणीय हो सकते हैं परन्तु जो-जो घटना रामायण में जब जब होनी वर्णित की गई है वह प्रायः ठीक निकलती है। राम का वनवास १४ वर्ष का प्रमाणित होता है। किसी काल्पनिक काव्य या उपन्यास में यह निश्चितता नहीं हो सकती। यह इतिहास में ही संभव है। यहाँ हम यह संकेत अवश्य कर दें कि भारतीय पारम्परिक काल गणना में राम का समय ९ लाख वर्ष से भी ज्यादा प्राचीन है। उपर्युक्त साफ्टवेयर से जो कालगणना आयी है उस संदर्भ में निवेदन है कि उन नक्षत्रादि स्थितियों को और प्राचीन समय में देखा जाय तो वहाँ भी उनके पाये जाने की संभावना से इन्कार नहीं किया जा सकता। युतियाँ निश्चित अन्तराल पर पुनः उपस्थित होती हैं, चाहे वह २५-५० हजार वर्ष बाद हो। इसे भी ध्यान में रखना होगा।

रामायण जैसे इतिहास को मिथक अथवा कल्पना की कोटि में धकेल देने का अपराध अन्य किसी ने नहीं हमने ही किया है यह बात कड़वी अवश्य है पर सही यही है। अवतारवाद, चमत्कारवाद व सृष्टि के नियमों से विरुद्ध असंभव कल्पनाओं को विशुद्ध इतिहास में प्रक्षेपित करने के दोषी हम हैं। वस्तुतः जब कोई महापुरुष ऐसे-ऐसे महान् कार्य कर जाते हैं कि हमारे लिए यह मानना भी कठिन हो जाता है कि कोई मनुष्य ऐसे महान् कार्य कर सकता है तो उसे अलौकिक श्रेणी में डालने की तैयारी शुरू हो जाती है। उसके जन्म को नवीन कथानक सृजित कर अलौकिक बनाया जाता है। इसी प्रकार उसके जीवन के अन्य प्रसंगों को। समय के साथ-साथ ऐसे किस्से-कहानियाँ और विस्तार पा जाते हैं। परिणाम यह होता है कि जब कोई बुद्धिवादी निष्पक्षता के साथ तर्क के आधार पर, ऐसे जीवन चरित्र का पर्यालोचन करता है तो उसे काल्पनिक करार दे देता है। ऐसा ही रामायण के साथ हुआ है। इन कल्पना प्रसूत अलौकिक गाथाओं को झूम-झूम कर गा गाकर हम मग्न भले ही हो लें परन्तु हम नहीं जानते कि हमने अपने राष्ट्र

का, अपनी सभ्यता-संस्कृति का और स्वयं संबंधित महापुरुष का कितना बड़ा नुकसान किया है। साथ ही किसी के कद को नापने की इतनी अवास्तविक कसौटियाँ स्थापित कर दी हैं कि सच्चे साधुओं का मूल्यांकन नहीं हो पाता और चालाक बाजीगर छली कपटी आराध्य बने घूम रहे हैं।

इस बौद्धिक सर्वनाश का सहभागी, राष्ट्र का सबसे बड़ा दुश्मन है।

रामसेतु की बात को ही लें। वाल्मीकि रामायण में इस सेतु के निर्माण का विशद वर्णन है । वहाँ नल नाम के अभियांत्रिकी विशेषज्ञ का वर्णन है। भारी यंत्रों से भार ढोने

का वर्णन है। रस्से पकड़ कर वानर सेना द्वारा पुल बनाने के कार्य का वर्णन है। जो कि सारे प्रकरण को यथार्थता प्रदान करता है। वाल्मीकि रामायण-युद्ध काण्ड के २२ वें सर्ग में सेतु निर्माण का विशद् वर्णन है। विस्तार भय से केवल कुछ वाक्य यहाँ प्रस्तुत कर रहे हैं।

१.बलवान वानर श्रेष्ठ नल राम से बोले-विस्तीर्ण समुद्र के ऊपर मैं पुल का निर्माण करूँगा।

२.वे विशालकाय तथा बलवान वानर... पर्वत और शिलाओं को यंत्रों के द्वारा लाने लगे।

३.बेल ....अशोक के वृक्षों से सागर को भी भरना आरम्भ कर दिया।

४. फेंके गए पर्वत खण्डों से उठा हुआ जल आकाश की ओर पुनः पुनः उठने लगा। **(तैरते पत्थरों से जल ऊपर नहीं उठता)**

५.अन्य वानरों ने ... फैले हुए सूत को पकड़ा कुछ वानर डण्डे पकड़े हुए थे तथा अन्य सामान एकत्र कर रहे थे।

६.राम की आज्ञानुसार ...शिलाखण्डों, घास और लकड़ियों से पुल बाँध रहे थे।

७.नल द्वारा निर्मित उस दुष्कर पुल को गन्धर्वों ने देखा।

८. वानरों की वह सेना 'नल के सेतु' के पार हो गई।

पाठकगण देखें। समुद्र के ऊपर पुल बनाए जाने का जीवन्त चित्रण इस सर्ग में किया है। कहीं कोई अलौकिकता अथवा चमत्कार नहीं। 'श्री राम' नाम लिखकर पत्थर तैर गये उसका संकेत मात्र भी नहीं। स्पष्ट है कि ऐतिहासिक राम सेतु (नल सेतु) को मिथकीय बना देने के दोषी हम हैं। ऐसे ही कारणों से कुछ लोग राम को भी कल्पना की ईजाद कह देते हैं।

परन्तु हमने प्रथम तो वानर सेना को 'बन्दर जाति' बना दिया, नल नील को रीछ बना दिया। फिर अलौकिकता का आनन्द लेने हेतु प्रसिद्ध किया और आज भी बलपूर्वक प्रचारित करने में लगे हैं कि पत्थरों पर 'श्री राम' का नाम लिखकर समुद्र में फेंक दिए और वे तैरने लगे उन पर से वानर सेना पार हो गई। अभी कुम्भ के मेले में एक पत्थर का प्रदर्शन किया जा रहा था जो पानी पर तैर रहा था और उसे रामसेतु का पत्थर कहा जा रहा था।

अभी मनुष्य ने प्रकृति के रहस्यों में एक प्रतिशत को भी जान लिया है ऐसा दावा नहीं किया जा सकता ऐसी स्थिति में अपनी मान्यताओं को आस्था का जामा पहनाकर ऐतिहासिक रूप में प्रस्थापित करने की चेष्टा असफल ही रहेगी।

हम इस बात को भी प्रशस्त नहीं मानते कि रामसेतु को बचाने की मुहिम को हिन्दुओं की आस्था से जोड़ा जाए। **रामसेतु, हमारे विचार में एक ऐसे काल में जिसके बारे में आज यह समझा जाता है कि तत्समय में विज्ञान का अभाव था, मनुष्य जाति के अकल्पनीय विज्ञान व शिल्प के कौशल का नमूना है। वह विश्व मानवता की थाती है।** Word Heritage **है**। आज हम लाखों रुपये खर्च कर उत्खनन आदि वैज्ञानिक प्रक्रियाओं के माध्यम से प्राचीन सभ्यता तथा वैज्ञानिक उन्नति की खोज में लगे रहते हैं तथा एक मटका भी हमें मिल जाये तो उपलब्धि पर नाचते हैं। कुछ सौ वर्षों पूर्व के सुन्दर शिल्प स्थापत्य कला के तेजोमहालय (ताजमहल) को विश्व के आश्चर्य में गिनते हैं वहाँ रामसेतु किस आधार पर मनुष्य की उपेक्षा का शिकार हो सकता है? **प्राचीन भारत में विज्ञान की उन्नति का प्रतीक रामसेतु सम्पूर्ण राष्ट्र के लिए महत्वपूर्ण है। हर कीमत पर इसकी रक्षा होनी चाहिए।** और फिर जबकि इसे नष्ट कर जो ३०० मीटर चौड़ी नहर बनायी जा रही है, विशेषज्ञों के अनुसार उसका निर्माण, पर्यावरण, पारिस्थितिकी, जैव विविधता, का निश्चित विनाशक और आगामी सुनामी का आमंत्रण कर भारत के तटीय प्रदेश विशेष रूप से केरल में भयकर तबाही लाने वाला होगा और विशेष रूप से अभी हाल ही में डा. आर.के.पचौरी समिति की रिपोर्ट के प्रकाश में जहाँ कि 'सेतु समुद्रम परियोजना' का उक्त प्रकार का ही तथ्यपरक विश्लेषण प्रस्तुत किया है, कोई कारण नहीं कि सेतु समुद्रम योजना पर आगे कार्य किया जाय। रामसेतु की रक्षार्थ हर भारतीय को तत्पर रहना चाहिए।

- अशोक आर्य
०९३१४२३५१०१, ०९००१३९८३६

विक्रम संवत-२०७०

धूम-धाम से मनाएं नया साल

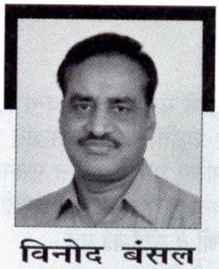

विनोद बंसल

भारत व्रत पर्व व त्यौहारों का देश है। यूँ तो काल गणना का प्रत्येक पल कोई न कोई महत्व रखता है किन्तु कुछ तिथियों का भारतीय काल गणना (कलैंडर) में विशेष महत्व है। भारतीय नव वर्ष (विक्रमी संवत्) का पहला दिन (यानि चैत्र-प्रतिपदा) अपने आप में अनूठा है। इसे नव संवत्सर भी कहते हैं। इस दिन पृथ्वी सूर्य का एक चक्कर पूरा करती है तथा दिन-रात बराबर होते हैं। इसके बाद से ही रात्रि की अपेक्षा दिन बड़ा होने लगता है। काली अंधेरी रात के अन्धकार को चीर चन्द्रमा की चाँदनी अपनी छटा बिखेरना शुरू कर देती है। वसंत ऋतु का राज होने के कारण प्रकृति का सौंदर्य अपने चरम पर होता है। फाल्गुन के रंग और फूलों की सुगंध से तन-मन प्रफुल्लित और उत्साहित रहता है।

विक्रमी संवत्सर की वैज्ञानिकता

भारत के पराक्रमी सम्राट विक्रमादित्य द्वारा प्रारम्भ किये जाने के कारण इसे विक्रमी संवत् के नाम से जाना जाता है। विक्रमी संवत् के बाद ही वर्ष को १२ माह का और सप्ताह को ७ दिन का माना गया। इसके महीनों का हिसाब सूर्य व चंद्रमा की गति के आधार पर रखा गया। विक्रमी संवत् का प्रारम्भ अंग्रेजी कलैण्डर ईसवीं सन् से ५७ वर्ष पूर्व ही हो गया था।

चन्द्रमा के पृथ्वी के चारों ओर एक चक्कर लगाने को एक माह माना जाता है, जबकि यह २९ दिन का होता है। हर मास को दो भागों में बाँटा जाता है- कृष्णपक्ष और शुक्लपक्ष। कृष्णपक्ष में चाँद घटता है और शुक्लपक्ष में चाँद बढ़ता है। दोनों पक्ष प्रतिपदा, द्वितीया, तृतीया, चतुर्थी आदि ऐसे ही चलते हैं। कृष्णपक्ष के अन्तिम दिन (यानी अमावस्या को) चन्द्रमा बिल्कुल भी दिखाई नहीं देता है जबकि शुक्लपक्ष के अन्तिम दिन (यानी पूर्णिमा को) चाँद अपने पूरे यौवन पर होता है।

अर्द्ध-रात्रि के स्थान पर सूर्योदय से दिवस परिवर्तन की व्यवस्था तथा सोमवार के स्थान पर रविवार को सप्ताह का प्रथम दिवस घोषित करने के साथ चैत्र कृष्ण प्रतिपदा के स्थान पर चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से वर्ष का आरम्भ करने का एक वैज्ञानिक आधार है। वैसे भी इंग्लैण्ड के ग्रीनविच नामक स्थान से दिन परिवर्तन की व्यवस्था में अर्द्ध-रात्रि के १२ बजे को आधार इसलिए बनाया गया है क्योंकि उस समय भारत में भगवान भास्कर की अगवानी करने के लिए प्रातः ५-३० बज रहे होते हैं। वारों के नामकरण की विज्ञान सम्मत प्रक्रिया को देखें तो पता चलता है कि आकाश में ग्रहों की स्थिति सूर्य से प्रारम्भ होकर क्रमशः बुध, शुक्र, चन्द्र, मंगल, गुरु और शनि की है। पृथ्वी के उपग्रह चन्द्रमा सहित इन्हीं अन्य छह ग्रहों पर सप्ताह के सात दिनों का नामकरण किया गया। तिथि घटे या बढ़े किन्तु सूर्य ग्रहण सदा अमावस्या को होगा और चन्द्र ग्रहण सदा पूर्णिमा को होगा, इसमें अंतर नहीं आ सकता। तीसरे वर्ष एक मास बढ़ जाने पर भी ऋतुओं का प्रभाव उन्हीं महीनों में दिखाई देता है, जिनमें सामान्य वर्ष में दिखाई पड़ता है। जैसे, वसन्त के फूल चैत्र-वैशाख में ही खिलते हैं और पतझड़ माघ-फाल्गुन में ही होती है। इस प्रकार इस कालगणना में नक्षत्रों, ऋतुओं, मासों व दिवसों आदि का निर्धारण पूरी तरह प्रकृति पर आधारित वैज्ञानिक रूप से किया गया है।

ऐतहासिक संदर्भ -

चैत्र प्रतिपदा पृथ्वी का प्राकट्य दिवस, ब्रह्मा जी के द्वारा निर्मित सृष्टि का प्रथम दिवस, सतयुग का प्रारम्भ दिवस, त्रेता में भगवान श्री राम के राज्याभिषेक का दिवस (जिस दिन राम राज्य की स्थापना हुई), द्वापर में धर्मराज युधिष्ठिर का राज्याभिषेक दिवस होने के अलावा कलयुग के प्रथम सम्राट परीक्षित के सिंहासनारूढ़ होने का दिन भी है। इसके अतिरिक्त देव पुरुष संत झूलेलाल, महर्षि गौतम व समाज संगठन के सूत्र पुरुष तथा सामाजिक चेतना के प्रेरक डा. केशव बलिराम हेड़गेवार का जन्म दिवस भी यही है। इसी दिन समाज सुधार के युग प्रणेता स्वामी दयानन्द सरस्वती ने आर्य समाज की स्थापना की थी। वर्ष भर के लिए शक्ति संचय करने हेतु नौ दिनों की शक्ति साधना (चैत्र नवरात्रि) का प्रथम दिवस भी यही है। इतना ही नहीं, दुनिया के महान् गणितज्ञ भास्कराचार्य जी ने इसी दिन से सूर्योदय से सूर्यास्त तक दिन, महीना और वर्ष की गणना करते हुए पंचांग की रचना की। भगवान राम ने बाली के अत्याचारी शासन से दक्षिण की प्रजा को मुक्ति इसी दिन दिलाई। महाराज विक्रमादित्य ने आज से २०६८ वर्ष पूर्व राष्ट्र को सुसंगठित कर शकों की शक्ति का उन्मूलन कर यवन, हूण, तुषार, तथा कंबोज देशों पर अपनी विजय ध्वजा फहराई थी। उसी विजय की स्मृति में यह प्रतिपदा संवत्सर के रूप में मनाई जाती है।

अन्य काल गणनाऐं -

ग्रेगेरियन (अंग्रेजी) कलेण्डर की काल गणना मात्र दो हजार वर्षों के अति अल्प समय को दर्शाती है। जबकि यूनान की काल गणना ३५८१ वर्ष, रोम की २७५८ वर्ष, यहूदी ५७६६ वर्ष, मिस्त्र की २८६७२ वर्ष, पारसी १६८८७६ वर्ष तथा चीन की ९६००२३०६ वर्ष पुरानी है। इन सबसे अलग यदि भारतीय काल गणना की बात करें तो हमारे ज्योतिष के अनुसार पृथ्वी की आयु एक अरब ९७ करोड़ ३९ लाख ४९ हजार १११ वर्ष है। जिसके व्यापक प्रमाण हमारे पास उपलब्ध हैं। हमारे प्राचीन ग्रंथों में एक-एक पल की गणना की गयी है। जिस प्रकार ईस्वी सम्वत् का सम्बन्ध ईसाई जगत् से है उसी प्रकार हिजरी सम्वत् का सम्बन्ध मुस्लिम जगत् और हजरत मुहम्मद साहब से है। किन्तु

विक्रमी सम्वत् का सम्बन्ध किसी भी धर्म से न हो कर सारे विश्व की प्रकृति, खगोल सिद्धांत व ब्रह्माण्ड के ग्रहों व नक्षत्रों से है। इसलिए भारतीय काल गणना पंथ निरपेक्ष होने के साथ सृष्टि की रचना व राष्ट्र की गौरवशाली परम्पराओं को दर्शाती है।

ग्रन्थों व संतों का मत -

स्वामी विवेकानन्द ने कहा था - ''यदि हमें गौरव से जीने का भाव जगाना है, अपने अन्तर्मन में राष्ट्र भक्ति के बीज को पल्लवित करना है तो राष्ट्रीय तिथियों का आश्रय लेना होगा। गुलाम बनाए रखने वाले परकीयों की दिनांकों पर आश्रित रहनेवाला अपना आत्म गौरव खो बैठता है।''

महात्मा गाँधी ने १९४४ की हरिजन पत्रिका में लिखा था ''स्वराज्य का अर्थ है- स्वसंस्कृति, स्वधर्म एवं स्वपरम्पराओं का हृदय से निर्वहन करना। पराया धन और परायी परम्परा को अपनाने वाला व्यक्ति न ईमानदार होता है न आस्थावान।''

नव संवत् यानि संवत्सरों का वर्णन यजुर्वेद के २७वें व ३०वें अध्याय के मंत्र क्रमांक क्रमशः ४५ व १५ में भी विस्तार से दिया गया है।

स्वाधीनता के पश्चात् -

व्यापारिक प्रतिष्ठानों को अपना-अपना अधिकृत लेखा जोखा इसी आधार पर रखना होता है जिसे 'वही-खाता वर्ष' कहा जाता है। भारत के आयकर कानून के अनुसार प्रत्येक कर दाता को अपना कर निर्धारण भी इसी के आधार पर करवाना होता है जिसे कर निर्धारण वर्ष कहा जाता है। भारत सरकार तथा समस्त राज्य सरकारों का बजट वर्ष भी इसी के साथ प्रारंभ होता है। सरकारी पंचवर्षीय योजनाओं का आधार भी यही वित्तीय वर्ष होता है।

कैसे करें नव वर्ष का स्वागत -

हमारे यहाँ रात्रि के अंधकार में नववर्ष का स्वागत नहीं होता बल्कि, भारतीय नव वर्ष तो सूरज की पहली किरण का स्वागत करके मनाया जाता है। सभी को नववर्ष की बधाई प्रेषित करें। नववर्ष के ब्रह्ममुहूर्त में उठकर स्नान आदि से निवृत्त होकर पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य आदि से घर में सुगंधित वातावरण बनाएँ। शंख व मंगल ध्वनि के साथ प्रभात फेरियाँ निकाल कर ईश्वर उपासना हेतु वृहद यज्ञ करें तथा गऊओं, संतों व बड़ों की सेवा करें। घरों, कार्यालयों व व्यापारिक प्रतिष्ठानों को भगवा ध्वजों व तोरण से सजाएँ। संत, ब्राह्मण, गाय इत्यादि को भोजन कराएँ। रोली-चन्दन का तिलक लगाते हुए मिठाइयाँ बाँटें। इनके अलावा नववर्ष

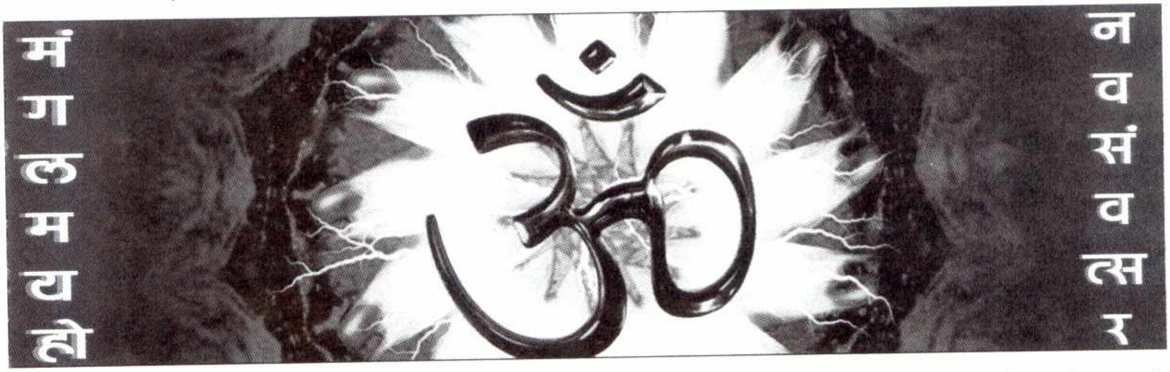

देश की स्वाधीनता के बाद पंडित जवाहरलाल नेहरू के कार्यकाल में पंचांग सुधार समिति का गठन किया गया जिसके अध्यक्ष प्रो. मेघनाथ साहा थे। वे स्वयं तो परमाणु वैज्ञानिक थे ही साथ ही उनकी इस समिति में एक भी सदस्य ऐसा नहीं था, जो भारत की ज्योतिष विद्या या हमारे धर्म शास्त्रों का ज्ञान रखता हो। यही नहीं, प्रो. साहा स्वय भी भारतीय काल गणना के सूर्य सिद्धात के सर्वथा विरोधी थे तथा ज्योतिष को मूर्खतापूर्ण मानते थे। परिणामतः इस समिति ने जो पंचांग बनाया उसे ग्रेगेरियन कलेंडर के अनुरूप ही बारह मासों में बाँट दिया गया। अंतर केवल उनके नामकरण में रखा। अर्थात् जनवरी, फरवरी आदि के स्थान पर चैत्र, बैशाख आदि रख दिए। लेकिन, महीनों व दिवसों की गणना ग्रेगेरियन कलेंडर के आधार पर ही की गई।

पर्व एक नाम अनेक -

चेती चाँद का त्यौहार, गुडी पडवा त्यौहार (महाराष्ट्र), उगादी त्यौहार (दक्षिण भारत) भी इसी दिन पडते हैं। वर्ष प्रतिपदा के आसपास ही पडने वाले अंग्रेजी वर्ष के अप्रेल माह से ही दुनियाभर में पुराने कामकाज को समेटकर नए कामकाज की रूपरेखा तय की जाती है। समस्त भारतीय व्यापारिक व गैर

प्रतिपदा पर कुछ ऐसे कार्य भी किए जा सकते हैं जिनसे समाज में सुख, शान्ति, पारस्परिक प्रेम तथा एकता के भाव उत्पन्न हों। जैसे, गरीबों और रोगग्रस्त व्यक्तियों की सहायता, वातावरण को प्रदूषण से मुक्त रखने हेतु वृक्षारोपण, समाज में प्यार और विश्वास बढ़ाने के प्रयास, शिक्षा का प्रसार तथा सामाजिक कुरीतियाँ दूर करने जैसे कार्यों के लिए संकल्प लें। सामुदायिक सफाई अभियान, खेल कूद प्रतियोगिताएँ, रक्त दान शिविर इत्यादि का आयोजन भी किया जा सकता है। आधुनिक साधनों (यथा एस एम एस, ई-मेल, फेस बुक, और्कुट के साथ-साथ बैनर, होर्डिंग व कर-पत्रकों) के माध्यम से भी नव वर्ष की बधाईयाँ प्रेषित करते हुए उसका महत्व जन-जन तक पहुचाएँ।

इन श्रेष्ठताओं को राष्ट्र की ऋचाओं में समेटने एवं जीवन में उत्साह व आनन्द भरने के लिये यह नव संवत्सर की प्रतिपदा प्रति वर्ष समाज-जीवन में आत्म गौरव भरने के लिए आता है। आवश्यकता इस बात की है कि हम सब भारतवासी इसे पूरी निष्ठा के साथ आत्मसात कर धूम-धाम से मनाएँ और विश्वभर में इसका प्रकाश फैलाएँ। आओ! **सन् को छोड़ संवत् अपनाएँ, निज गौरव का मान जगाएँ।**

३२६, द्वितीय तल, संत नगर,
ईस्ट ऑफ कैलाश, नई दिल्ली
मो० ९९१०९४६१०९

आर्य समाज स्थापना दिवस पर विशेष

आर्य समाज

स्वाभिमान का उदय

कविवर रामधारीसिंह दिनकर

सत्यार्थ प्रकाश के एकादश समुल्लास में स्वामी दयानन्द ने ब्राह्म-समाज और प्रार्थना-समाज के विषय में निम्नलिखित बातें लिखी हैं-

''जो कुछ ब्राह्म-समाज और प्रार्थना-समाजियों ने ईसाई मत में मिलने से थोड़े मनुष्यों को बचाये और कुछ-कुछ पाषाणादि मूर्ति-पूजा को हटाया, अन्य जालग्रन्थों के फन्दों से भी बचाये इत्यादि अच्छी बातें है। परन्तु, इन लोगों में स्वदेश-भक्ति बहुत न्यून है। ईसाइयों के आचरण बहुत से लिये हैं। खान-पान, विवाहादि के नियम भी बदल दिये हैं। अपने देश की प्रशंसा और पूर्वजों की बड़ाई करनी तो दूर रही, उसके बदले पेट भर निन्दा करते हैं। व्याख्यानों में ईसाई आदि अँगरेजों की प्रशंसा भर पेट करते हैं। ब्रह्मादि महर्षियों का नाम भी नहीं लेते। प्रत्युत, ऐसा कहते हैं कि बिना अंगरेजों के सृष्टि में आज पर्यन्त कोई विद्वान् नहीं हुआ। आर्यावर्त्ती लोग सदा से मूर्ख चले आये हैं। वेदादिकों की प्रतिष्ठा तो दूर रही, परन्तु, निन्दा करने से भी पृथक् नहीं रहते, ब्राह्म-समाज के उद्देश्य के पुस्तक में साधुओं की संख्या में ईसा, मूसा, मुहम्मद, नानक और चैतन्य लिखे हैं। किसी ऋषि-महर्षि का नाम भी नहीं लिखा।''

केशवचन्द्र और रानाडे की तुलना में दयानन्द वैसे ही दीखते हैं, जैसे गोखले की तुलना में तिलक। **जैसे राजनिति के क्षेत्र में हमारी राष्ट्रीयता का सामरिक तेज, पहले-पहल, तिलक में प्रत्यक्ष हुआ, वैसे ही संस्कृति के क्षेत्र में भारत का आत्माभिमान स्वामी दयानन्द में निखरा।** ब्राह्म-समाज और प्रार्थना-समाज के नेता अपने धर्म और समाज में सुधार तो ला रहे थे, किन्तु उन्हें बराबर यह खेद सता रहा था कि हम जो कुछ कर रहे हैं, वह विदेश की नकल है। अपनी हीनता और विदेशियों की श्रेष्ठता के ज्ञान से उनकी आत्मा, कहीं-न-कहीं, दबी हुई थी। अतएव, कार्य तो, प्रायः उनके भी वैसे ही रहे, जैसे स्वामी दयानन्द के, किन्तु आत्महीनता के भाव से अवगत रहने के कारण वे दर्प से नहीं बोल सके। **यह दर्प स्वामी दयानन्द में चमका।** रूढ़ियों और गतानुगतिकता में फँसकर अपना विनाश करने के कारण उन्होंने भारतवासियों की कड़ी निन्दा की और उनसे कहा कि तुम्हारा धर्म पौराणिक संस्कारों की धूल में छिप गया है। इन संस्कारों की गंदी पर्त्तों को तोड़ फेंको। तुम्हारा सच्चा धर्म वैदिक धर्म है, जिस पर आरूढ़ होने से तुम फिर से विश्व-विजयी हो सकते हो। किन्तु, इससे भी कड़ी फटाकार उन्होंने ईसाइयों पर और मुसलमानों पर भेजी, जो दिन-दहाड़े हिन्दुत्व की निन्दा करते फिरते थे। ईसाई और मुस्लिम पुराणों में घुसकर उन्होंने इन धर्मों में भी वैसे ही दोष दिखला दिये जिनके कारण ईसाई और मुसलमान हिन्दुत्व की निन्दा करते थे। इससे दो बातें निकलीं। एक तो यह कि अपनी निन्दा सुनकर कर घबरायी हुई हिन्दू-जनता को यह जानकर कुछ सन्तोष हुआ कि पौराणिकता के मामले में ईसाइयत और इस्लाम भी हिन्दुत्व से अच्छे नहीं हैं। दूसरी यह कि हिन्दुओं का ध्यान अपने धर्म के मूलरूप की ओर आकृष्ट हुआ एवं वे अपनी प्राचीन परम्परा के लिए गौरव का अनुभव करने लगे।

आक्रामकता की ओर

राममोहन और रानाडे ने हिन्दुत्व के पहले मोर्चे पर लड़ाई लड़ी थी जो रक्षा या बचाव का मोर्चा था। स्वामी दयानन्द ने आक्रामकता का थोड़ा-बहुत श्रीगणेश कर दिया, क्योंकि वास्तविक रक्षा का उपाय तो आक्रमण की ही नीति है। सत्यार्थ-प्रकाश में जहाँ हिन्दुत्व के वैदिक रूप का गहन आख्यान है, वहाँ उसमें ईसाइयत और

इस्लाम की आलोचना पर भी अलग-अलग दो समुल्लास हैं। अब तक हिन्दुत्व की निन्दा करने वाले लोग निश्चिन्त थे कि हिन्दू अपना सुधार भले करता हो, किन्तु, बदले में हमारी निन्दा करने का उसे साहस नहीं होगा। **किन्तु, इस मेधावी एवं योद्धा**

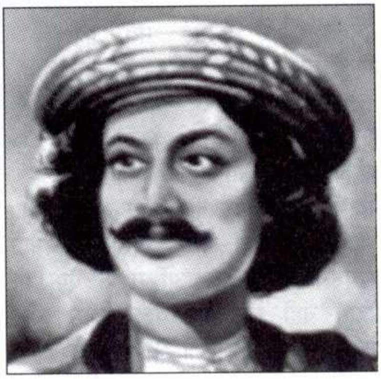

संन्यासी ने उनकी आशा पर पानी फेर दिया। यही नहीं, प्रत्युत, जो बात राममोहन, केशवचन्द्र और रानाडे के ध्यान में भी नहीं आयी थी, उस बात को लेकर स्वामी दयानन्द के शिष्य आगे बढ़े और उन्होंने घोषणा की कि धर्मच्युत् हिन्दू प्रत्येक अवस्था में अपने धर्म में वापस आ सकता है एवं अहिन्दू भी यदि चाहें तो हिन्दू-धर्म में प्रवेश पा सकते हैं। **यह केवल सुधार की वाणी नहीं थी, जाग्रत हिन्दुत्व का समर-नाद था। और सत्य ही, रणारूढ़**

समर-नाद था। और सत्य ही, रणारूढ़ हिन्दुत्व के जैसे निर्भीक नेता स्वामी दयानन्द हुए, वैसा और कोई नहीं हुआ। इतिहास का क्रम कुछ ऐसा बना कि स्वामी दयानन्द की गिनती, महाराणा प्रताप, शिवाजी और गुरु गोविन्द की सरणी में की जाने लगी। किन्तु स्वामी दयानन्द मुसलमानों के विरोधी नहीं थे। स्वामी का जब स्वर्गवास हुआ, तब सुप्रसिद्ध मुस्लिम नेता सर सैयद अहमद खाँ ने जो सम्वेदना और शोक प्रकट किया, उससे स्पष्ट प्रतीत होता है कि मुस्लिम जनता के बीच भी स्वामीजी का यथेष्ट आदर था। स्वामीजी के आर्य-समाज और मुस्लिम-सम्प्रदाय के बीच का सम्बन्ध अच्छा नहीं रहा, यह सत्य है; किन्तु स्वामीजी के जीवन काल में ऐसी बात नहीं थी।

सच पूछिये तो स्वामीजी केवल इस्लाम के ही आलोचक नहीं थे, वे ईसाइयत और हिन्दुत्व के भी अत्यन्त कड़े आलोचक हुए हैं। सत्यार्थ-प्रकाश के त्रयोदश समुल्लास में ईसाई मत की आलोचना है और चतुर्दश समुल्लास में इस्लाम की। किन्तु, ग्यारहवें और बारहवें समुल्लासों में तो केवल हिन्दुत्व के ही विभिन्न अंगों की बखिया उधेड़ी गयी है और कबीर, दादू, नानक, बुद्ध तथा चार्वाक एवं जैनों और हिन्दुओं के अनेक पूज्य पौराणिक देवताओं मे से एक भी बेदाग नहीं छूटा है। वल्लभाचार्य और कबीर पर तो स्वामीजी इतना बरसे हैं कि उनकी आलोचना पढ़कर सहनशील लोगों की भी धीरता छूट जाती है। किन्तु, यह सब अवश्यम्भावी था। यूरोप के बुद्धिवाद ने भारतवर्ष को इस प्रकार झकझोर डाला था कि हिन्दुत्व के बुद्धि सम्मत रूप को आगे लाये बिना कोई भी सुधारक भारतीय संस्कृति की रक्षा नहीं कर सकता था। **स्वामीजी ने बुद्धिवाद की कसौटी बनायी और उसे हिन्दुत्व, इस्लाम और ईसायत पर निश्छल भाव से लागू कर दिया।** परिणाम यह हुआ कि पौराणिक हिन्दुत्व तो इस कसौटी पर खंड-खंड हो ही गया, इस्लाम और ईसाइयत की भी सैकड़ों कमजोरियाँ लोगों के सामने आ गयीं।

किसी का भी पक्षपात नहीं

चूँकि ईसाइयत और इस्लाम हिन्दुत्व पर आक्रमण कर रहे थे इसलिए, हिन्दुत्व की ओर से बोलने वाला प्रत्येक व्यक्ति ईसाइयत या इस्लाम अथवा दोनों का द्रोही समझ लिया गया। किन्तु, इस प्रसंग से अलग हटने पर **स्वामी दयानन्द विश्व-मानवता के नेता दीखते हैं।**

उनका उद्देश्य सभी मनुष्यों को उस

दिशा में ले जाना था, जिसे वे सत्य की दिशा समझते थे। उन्होंने सत्यार्थ-प्रकाश की भूमिका में स्वयं लिखा है कि "जो जो सब मतों में सत्य बातें हैं, वे वे सब में

अविरुद्ध होने से उनका स्वीकार करके जो जो मत-मतान्तरों में मिथ्या बातें हैं, उन उनका खंडन किया है। इसमें यह भी अभिप्राय रखा है कि जब मत-मतान्तरों की गुप्त वा प्रकट बुरी बातों का प्रकाश कर विद्वान्-अविद्वान् सब साधारण मनुष्यों के सामने रखा है, जिससे सब से सब का विचार होकर परस्पर प्रेमी हो के एक सत्य मतस्थ होवें। यद्यपि मैं आर्यावर्त्त देश में उत्पन्न हुआ और वसता हूँ, तथापि जैसे इस देश के मत-मतान्तरों की झूठी बातों का पक्षपात न कर यथातथ्य प्रकाश करता हूँ, वैसे ही दूसरे देशस्थ वा मत वालों के साथ भी वर्त्तता हूँ। जैसा स्वदेश वालों के साथ मनुष्योन्नति के विषय में वर्त्तता हूँ, वैसा विदेशियों के साथ भी, तथा सब सज्जनों को भी वर्त्तना योग्य है। क्योंकि मैं भी जो किसी एक का पक्षपाती होता, तो जैसे आजकाल के स्वमत की स्तुति, मण्डन और प्रचार करते और दूसरे मत की निन्दा, हानि और बन्ध करने में तत्पर होते हैं, वैसे मैं भी होता। परन्तु, ऐसी बातें मनुष्यपन से बाहर हैं।" अन्यत्र चौदहवें समुल्लास के अन्त में भी स्वामी जी ने कहा है कि "मेरा कोई नवीन कल्पना व मत-मतान्तर चलाने का लेशमात्र भी अभिप्राय नहीं है। किन्तु, जो सत्य है, उसे मानना-मनवाना और जो असत्य है, उसे छोड़ना-छुड़वाना मुझको अभीष्ट है। यदि मैं पक्षपात करता तो आर्यवर्त्त के प्रचलित मतों में से किसी एक मत का आग्रही होता। किन्तु, मैं आर्यावर्त्त वा अन्य देशों में जो अधर्म-युक्त चाल-चलन हैं, उनको स्वीकार नहीं करता और जो धर्मयुक्त बातें हैं, उनका त्याग नहीं करता, न करना चाहता हूँ क्योंकि ऐसा करना मनुष्य धर्म के विरुद्ध है।"

सुधार नहीं, क्रान्ति

उन्नीसवीं सदी के हिन्दू-नवोत्थान के इतिहास का पृष्ठ-पृष्ठ बतलाता है कि जब यूरोपवाले भारतवर्ष में आये, तब यहाँ के धर्म और संस्कृति पर रूढ़ि की पर्त्तें जमी हुई थीं एवं यूरोप के मुकाबले में था कि ये पर्तें उठने के लिए यह आवश्यक हो गया था कि ये पर्त्तें एकदम उखाड़ फेंकी जायँ और हिन्दुत्व का वह रूप प्रकट किया जाय जो निर्मल और बुद्धिगम्य हो। स्वामी के मत से यह हिन्दुत्व वैदिक हिन्दुत्व ही हो सकता था। किन्तु यह हिन्दुत्व पौराणिक कल्पनाओं के नीचे दबा हुआ था। उस पर अनेक स्मृतियों की धूल जम गयी थी एवं वेद के बाद सहस्रों वर्षों

में हिन्दुओं ने जो रूढ़ियाँ और अन्ध-विश्वास अर्जित किये थे उनके ढूहों के नीचे यह धर्म दबा पड़ा था। राममोहन राय, रानाडे, केशवचन्द्र और तिलक से भिन्न स्वामी दयानन्द की विशेषता यह रही कि उन्होंने धीरे-धीरे पपड़ियाँ तोड़ने का काम न करके, उन्हें एक ही चोट से साफ कर देने का निश्चय किया। **परिवर्तन जब धीरे-धीरे आता है, तब सुधार कहलाता है। किन्तु, वही जब तीव्र वेग से पहुँच जाता है, तब उसे क्रान्ति कहते हैं। दयानन्द के अन्य समकालीन सुधारक केवल सुधारक मात्र थे, किन्तु, दयानन्द क्रान्ति के वेग से आये और उन्होंने निश्छल भाव से यह घोषणा कर दी कि हिन्दू-धर्म-ग्रन्थों में केवल वेद ही मान्य हैं, अन्य शास्त्रों और पुराणों की बातें बुद्धि की कसौटी पर कसे बिना मानी नहीं जानी चाहिये।** छह शास्त्रों और अठारह पुराणों को उन्होंने एक ही झटके में साफ कर दिया। वेदों में मूर्त्तिपूजा, अवतारवाद, तीर्थों और अनेक पौराणिक अनुष्ठानों का समर्थन नहीं था, अतएव, स्वामीजी ने इन सारे कृत्यों और विश्वासों को गलत घोषित किया।

वेद को छोड़कर कोई अन्य धर्म-ग्रन्थ प्रमाण नहीं है, इस सत्य का प्रचार करने के लिए स्वामीजी ने सारे देश का दौरा करना आरम्भ किया और जहाँ-जहाँ वे गये, प्राचीन परम्परा के पंडित और विद्वान् उनसे हार मानते गये।

Attempt On Line Test
Win Rs. 5100/-
Log on www.satyarthprakashnyas.org

संस्कृत भाषा का उन्हें अगाध ज्ञान था। संस्कृत में वे धारावाहिक रूप से बोलते थे। साथ ही, वे प्रचंड तार्किक थे। उन्होंने ईसाई और मुस्लिम धर्म-ग्रन्थों का भी भलीभाँति मन्थन किया था। **अतएव, अकेले ही, उन्होंने तीन-तीन मोर्चों पर संघर्ष आरम्भ कर दिया।** दो मोर्चे तो ईसाइत और इस्लाम के थे, किन्तु तीसरा मोर्चा सनातनधर्मी हिन्दुओं का था, जिनसे जूझने में स्वामीजी को अनेक अपमान, कुत्सा, कलंक और कष्ट झेलने पड़े। उनके प्रचंड शत्रु ईसाई और मुसलमान नहीं, सनातनी हिन्दू ही निकले और, कहते हैं, अन्त में इन्हीं हिन्दुओं के षड्यंत्र से उनका प्राणांत भी हुआ। दयानन्द ने बुद्धिवाद की जो मशाल जलायी थी, उसका कोई जवाब नहीं था। वे जो कुछ कह रहे थे, उसका उत्तर न तो मुसमान दे सकते थे, न ईसाई, न पुराणों पर पलने वाले हिन्दू पंडित और विद्वान्। हिन्दू-नवोत्थान अब पूरे प्रकाश में आ गया था और अनेक समझदार लोग, मन-ही-मन, यह अनुभव करने लगे थे कि, सच ही, पौराणिक धर्म में कोई सार नहीं है।

('संस्कृति के चार अध्याय' से साभार)

दयानन्द सूक्ति - संग्रह बाल-शिक्षा

जब पाँच-पाँच वर्ष के लड़का और लड़की हों तब देवनागरी अक्षरों का अभ्यास करावें। अन्यदेशीय भाषाओं के अक्षरों का भी। कन्याओं और कुमारों में राजनियम और जाति नियम होना चाहिए कि पाँचवें अथवा आठवें वर्ष से आगे अपने लड़के और लड़कियों को घर में ना रखें।
-स.प्र.,समु.३,पृ.३७

जो विद्या-धर्म विरुद्ध भ्रान्ति में गिराने वाले व्यवहार हैं,उनका भी उपदेश कर दें, जिससे भूत,प्रेत आदि मिथ्या बातों का विश्वास न हो।
- स.प्र.,समु.३,पृ.२९-३०

प्रथम लड़कों का यज्ञोपवित घर में हो और दूसरा आचार्यकुल में हो। पिता, माता वा अध्यापक अपने लड़के लड़कियों को अर्थ सहित गायत्री मंत्र का उपदेश कर दें।
-स.प्र.,समु. ३, पृ. ३७

जन्म से पाँचवें वर्ष तक बालकों को माता,६वर्ष से ८ वर्ष तक पिता शिक्षा करे और ९ वर्ष के प्रारम्भ में द्विज अपने सन्तानों का उपनयन करके आचार्यकुल में अर्थात् जहाँ पूर्ण विद्वान् और पूर्ण विदुषी स्त्री शिक्षा और विद्यादान करने वाली हों, वहाँ लड़के और लड़कियों को भेज दें। और शूद्रादि वर्ण उपनयन किये बिना विद्याभ्यास के लिए गुरुकुल में भेज दें।
-स.प्र.,समु. २,पृ.३३

जो माता-पिता और आचार्य सन्तान और शिष्यों का ताड़न करते हैं,वे जानो अपने सन्तान और शिष्यों को अपने हाथ से अमृत पिला रहे हैं और जो सन्तानों व शिष्यों का लाड़न करते हैं, वे अपने सन्तानों और शिष्यों को विष पिलाकर नष्ट भ्रष्ट कर देते हैं।
-स.प्र.,समु. २

उन्हीं के सन्तान विद्वान्,सभ्य और सुशिक्षित होते हैं,जो पढ़ाने में सन्तानों का लाड़न कभी नहीं करते,किन्तु ताड़ना ही करते रहते हैं।
-स.प्र.समु. २,पृ.३३

गुरु, माता, पिता और जो सत्य का ग्रहण करावे और असत्य को छुड़ावे वह भी गुरु कहाता है। -स.प्र.समु. २,पृ.३३

सन्तानों को उत्तम विद्या,शिक्षा,गुण,कर्म और स्वभावयुक्त आभूषणों का धारण कराना माता, पिता, आचार्य और सम्बन्धियों का मुख्य कर्म है।
-स.प्र.समु.
३,पृ.३६

संकलनकर्त्ता - वेदाचार्य डॉ. रघुवीर वेदालंकार

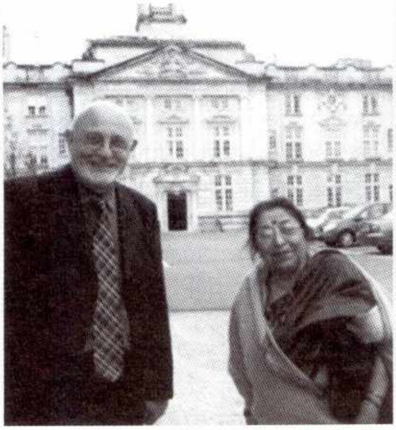

आर्य पुत्री पुष्पा कपिला हिंगोरानी जिन्होंने रचा इतिहास

"रूढ़िवादी परिवेश में जहाँ प्रायः लड़कियों के लिए उच्च शिक्षा निषिद्ध थी, महर्षि दयानन्द के विचारों से प्रेरित यह आपके आर्य समाजी पिता ही थे जिनकी प्रेरणा से पुष्पा कार्डिफ विश्व विद्यालय में जा सकीं। परोपकार की प्रबल भावना जो उनमें कूट-कूट कर भरी थी ने उन्हें निःसहाय विचाराधीन कैदियों की मसीहा तथा जनहित याचिकाओं की जनक बना दिया। उनके इस ज़जबे को सत्यार्थ सौरभ परिवार कृतज्ञतापूर्वक नमन करता है।"

- सम्पादक

भारतीय लोकतंत्र के तीन स्तम्भों में से न्यायपालिका पर जनता का भरोसा सबसे ज्यादा दिखता है। न्यायिक व्यवस्था को जनता के और करीब लाने, उसे ज्यादा सक्रिय बनाने वाले कुछ ऐसे औजार आज मौजूद हैं जो न्याय को आम आदमी की पहुँच में लाते हैं। ऐसे ही एक औजार जनहित याचिका का नाम आज सभी जानते हैं। मगर ३३ साल पहले ऐसा नहीं था। **ये पहल की थी सुप्रीम कोर्ट की एक महिला वकील पुष्पा कपिला हिंगोरानी ने।** 'जनहित याचिका की जननी' कही जाने वाली हिंगोरानी के प्रयासों और उनके प्रभावों पर नजरः-

कैसे हुई पीआईएल क्रान्ति की शुरूआत-

दिसम्बर, १९७९ में सुप्रीम कोर्ट की वकील पुष्पा कपिला हिंगोरानी ने सुप्रीम कोर्ट में एक याचिका दाखिल की। याचिका में बताया गया था कि बिहार में विचाराधीन कैदियों की क्या दुर्दशा है। खास बात ये थी कि यह याचिका किसी एक कैदी की ओर से नहीं दायर की थी। हिंगोरानी ने सभी कैदियों के बुरे हाल पर सवाल उठाया था। सुप्रीम कोर्ट में जस्टिस पी.एन. भगवती की अध्यक्षता वाली पीठ ने मामले की सुनवाई शुरू की। केस एक विचाराधीन कैदी हुसैनआरा खातून बनाम बिहार सरकार के नाम से ख्यात हुआ। याचिका में शीर्ष कोर्ट से हस्तक्षेप का आग्रह करते हुए सभी विचाराधीन कैदीयों को जमानत पर रिहा करने की माँग की गई थी। सुप्रीम कोर्ट ने माना कि विचाराधीन कैदियों को न्यायिक सहायता और तेज सुनवाई का लाभ मिलना चाहिए। **इस याचिका के चलते ही अंततः करीब ४० हजार विचाराधीन कैदियों को रिहा किया गया।** इस केस की सफलता के चलते देशभर से इस तरह की याचिकाएँ आनी शुरू हो गईं। १९८० में सुप्रीम कोर्ट रजिस्ट्रार के तहत जनहित याचिकाओं का नया सेक्शन गठित किया गया। इन याचिकाओं ने अपनी बात सीधे न्यायालय के समक्ष रखने का आम आदमी को एक मौका दे दिया। सुप्रीम कोर्ट ने सादे पोस्टकार्ड पर लिखी चिट्ठी को भी जनहित याचिका के तौर पर स्वीकार कर क्रान्ति को नई दिशा दे दी।

न्यायपालिका की सक्रियता को मिली नई दिशा-

हुसैनआरा खातून बनाम बिहार सरकार केस के साथ शुरू हुई जनहित याचिका क्रान्ति ने न्यायपालिका की सकारात्मक सक्रियता को एक नई दिशा भी दे दी। जनहित से जुड़े किसी भी मुद्दे पर स्वतः संज्ञान लेने के अधिकार का इस्तेमाल अदालतों ने शुरू किया। इस क्रान्ति से देश में उस दौर का आगाज हुआ जब अखबारों में छपी खबरों, पत्रिकाओं में छपे लेख या अन्य किसी भी घटना या वस्तु पर अदालतें स्वतः संज्ञान ले मामला शुरू करने लगीं। साथ ही व्यक्तियों, स्वयंसेवी संस्थाओं के पत्रों को भी बतौर याचिका अदालतों में केस शुरू करने का आधार बनाया जाने लगा। १९८० के दशक में सुप्रीम कोर्ट ने कई मामलों में व्यक्तियों व संस्थाओं की चिट्ठियों को आधार बना मामला शुरू किया। उसी दौर में शीर्ष अदालत ने पीआईएल के लिए अलग व्यवस्था की।

रिटायर नहीं होते वकील-
हुसैनआरा खातून केस की सफलता के साथ जो काम मैंने शुरू किया था, वही आज भी करना चाहती हूँ। वकील कभी रिटायर नहीं होता।
-पुष्पा कपिला हिंगोरानी

पुष्पा कपिला हिंगोरानी का जन्म केन्या की राजधानी नैरोबी में एक आर्य समाजी परिवार में हुआ था। उच्च शिक्षा उन्होंने ब्रिटेन के कार्डिफ विश्वविद्यालय से हासिल की थी। पुष्पा सम्भवतः इस विश्वविद्यालय में शिक्षा ग्रहण करने वाली पहली भारतीय महिला हैं। माँ की इच्छा के विरुद्ध, पिता की प्रेरणा पर वे १९४७ में कार्डिफ विश्वविद्यालय में पढ़ाई करने पहुँची थीं। यहाँ वो अंग्रेजी, अर्थशास्त्र और इतिहास की पढ़ाई करने के लिए आईं थीं। विश्वविद्यालय में पढ़ाई के दौरान वाद-विवाद में उनका मन लगने

१९६१ में वकालत शुरू की।

पिछले ३३ साल में पुष्पा अपने पति निर्मल हिंगोरानी के साथ लोगों को न्याय दिलाने के अभियान में जुटी हैं। इन वर्षों में उन्होंने १०० से ज्यादा जनहित याचिकाएँ दायर की हैं, सभी बिना किसी शुल्क के। १९८१ में भागलपुर आँखफोडवा कांड और १९८३ के रुदल शाह केस में भी उन्होंने जनहित याचिका दायर की थी। उनका कहना है कि लोगों को न्याय दिलाने के उद्देश्य से वह पीछे नहीं हट सकतीं। फिलहाल वे जनहित याचिका विषय पर पुस्तक लिख रही हैं।

लगा। प्रत्येक शुक्रवार को हालिया मुद्दों पर होने वाली बहसों में वो हिस्सा लेने लगीं। पढ़ाई के साथ-साथ उन्होंने लंदन में अनारेबल सोसायटी ऑफ मिंकन्स दन ज्वाइन कर लिया ताकि वो बार (विधि) को पास कर सकें। हालांकि शुरूआत में ही वो कीनिया लौट आई और यहाँ आकर उन्होंने एक शिक्षिका के पद के लिए आवेदन किया। लेकिन जब उन्हें पता लगा कि उन्हें एक पुरुष या एक यूरोपियन की तुलना में कम वेतन मिलेगा, तो उन्होंने इन्कार कर दिया। उन्होंने एक स्कूल शुरू किया, जो अच्छा चला लेकिन वो जल्द ही बेचैन हो गईं। दो वर्ष बाद वे नई दिल्ली में बस गईं। उन्होंने

> "मैं एक ऐसे परिवार से थी, जहाँ लड़कियों को बाहर भेजने के बारे में सोचा ही नहीं जाता था। माँ का कहना था कि मैं शादी कर परिवार बसा लूँ। लेकिन मेरे पिता एक समाज सुधारक थे। उन्होंने मुझे कार्डिफ जाने के लिए प्रेरित किया।" - पुष्पा हिंगोरानी

आज भी याद है वह केस....

अपने इतने वर्षों के कॅरियर में पुष्पा कपिला हिंगोरानी को सबसे ज्यादा रोचक और अच्छा केस वह लगता है जब उन्होंने एक कुष्ठ रोगी को न्याय दिलवाया था। दिल्ली विकास प्राधिकरण ने एक कुष्ठ रोगी को उसकी झोंपड़ी बनाने के लिए १००० रुपये देना स्वीकार किया था। उन्होंने याचिका में कोर्ट से सवाल किया था कि एक व्यक्ति जो खुद से अपना खाना भी खाने में अक्षम है, वो अपनी झुग्गी कैसे बना सकता है। कोर्ट ने डीडीए को झुग्गी बनाकर देने का आदेश दिया था।

......अब दुख होता है

पुष्पा कपिला हिंगोरानी का कहना है कि जनहित याचिका की शुरूआत जनता और अदालतों के बीच दूरी को कम करने के लिए हुई थी। ये एक अच्छा प्रयास था और इससे न्याय तक पहुँच बढ़ी, मगर आज जनहित याचिकाओं के दुरुपयोग पर वे दुखी हैं। वे कहती हैं कि ये नहीं रुका तो जनहित याचिकाओं का प्रभाव घट जाएगा।

(राज. पत्रिका से साभार)

महर्षि दयानन्द चित्र दीर्घा–नवलखा महल

कृपालु आर्यजन! हमने सत्यार्थ सौरभ के गत अंक में महर्षि दयानन्द के अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश से संबंधित पवित्र स्थल 'नवलखा महल' के जीर्णोद्धार की आवश्यकता को रेखांकित करते हुए 'अर्थ-सहयोग' की अपील की थी। यह स्थापित तथ्य है कि ऋषिवर की स्मृति से जुड़े सभी तीर्थों में से 'नवलखा महल' ही के दर्शनार्थ गैर आर्य समाजी जन सर्वाधिक संख्या में आते हैं। इसका प्रमुख कारण झीलों की नगरी उदयपुर का विश्व प्रसिद्ध पर्यटन नगरी होना भी है। इन दर्शकों को महर्षिवर के व्यक्तित्व व कृतित्व की कुछ जानकारी मिल सके इस उद्देश्य से यहाँ, वैदिक सूक्तियों का लेखन, महर्षि महिमा के गीतों पर थिरकते रंगीन कम्प्यूटराइज्ड फब्बारे के साथ अत्यन्त प्रभावशाली महर्षि-चित्र दीर्घा का स्थापन किया गया जो अब तक विश्व प्रसिद्ध हो चुकी है। अनुभव में यह आया कि चित्रदीर्घा अगर भूतल पर ही हो तो इसका अधिक उपयोग हो सकेगा। अतः अन्दर के चौक में चहुँ ओर सौन्दर्यीकरण को विस्तार देते हुए इस दीर्घा के ६८ तैल चित्रों व विवरण का दिग्दर्शन किया जा रहा है। सम्पूर्ण चौक भव्यता लिए होगा। दर्शकों को भाव-विभोर व प्रेरणा देने का पूरा प्रयास होगा। दीर्घा में श्री राम चरित्र, श्री कृष्ण चरित्र, छत्रपति शिवाजी व महाराणा प्रताप के जीवन प्रसंग भी दिग्दर्शित किए जावेंगे।

परन्तु आप जानते हैं कि अर्थ के अभाव में यह संभव नहीं। **अतः नवलखा महल के जीर्णोद्धार तथा सौन्दर्यीकरण हेतु अर्थ सहयोग भेजने की प्रार्थना है।**

-अशोक कुमार आर्य

ईसाई धर्म सुधारक-मार्टिन लूथर: जिसकी प्रशंसा ऋषि दयानन्द ने की

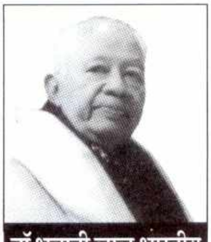
डॉ.भवानी लाल भारतीय

स्वयं गुण ग्राहक तथा सदाशय युक्त पुरुषों की प्रशंसा करने वाले ऋषि दयानन्द ने परमतावलम्बी उदारमना लोगों की सदा श्लाका की। १८७५ में महाराष्ट्र की काशी-पूना नगरी में जब उन्होंने अपने व्याख्यान दिए तो ३१ जुलाई शनिवार को अपने बारहवें प्रवचन में उन्होंने ईसाई धर्म में सुधार का आरम्भ करने वाले जर्मन देशीय मार्टिन लूथर की भूरि भूरि प्रशंसा की। उन्होंने कहा कि 'जिस देश में केवल सच्चाई के अभिमान से मार्टिन लूथर जैसे उदारचेता पुरुष ने सामयिक लोगों के विरुद्ध होते हुए भी पोप के अत्याचारों के विरुद्ध उपदेश देना आरम्भ कर दिया और अपने प्राण तक न्यौछावर करने के लिए उद्यत हो गए, उस देश में यदि ऐश्वर्य और अभ्युदय का डंका बजा तो कोई आश्चर्य की बात नहीं है। **(वैदिक पुस्तकालय अजमेर का संस्करण- डॉ. भवानी लाल भारतीय द्वारा सम्पादित)**

ई. १४८३ में जर्मनी में जन्मे मार्टिन लूथर ने अपने सुधारवादी, साथ ही क्रान्तिकारी विचारों से कैथोलिक ईसाई सम्प्रदाय में चलने वाले पोप के पाखण्डों का पर्दाफाश कर दिया। पन्द्रहवीं सदी के कैथोलिक धर्म में एक अंधविश्वास प्रचलित था जो पोप के द्वारा प्रचारित किया गया था। पोप का कहना था कि यदि कोई मनुष्य मरने के पश्चात् परलोक में स्वर्ग जाना चाहे तो उसे पोप का सिफारिशी पत्र जीते जी प्राप्त करना होगा। मृत्युकाल में इस पत्र को मरणावस्था प्राप्त व्यक्ति के सिरहाने रखना होगा। जब उसे कब्र में प्रविष्ट कराया जाये तो उसके सिरहाने यह पत्र रहे। इसे देखकर खुदा या उसका इकलौता पुत्र ईसा उसके लिए स्वर्ग में स्थान उपलब्ध करायेगा। पुराणपंथी ईसाई सम्प्रदाय (कैथोलिक) में पोप कहलाने वाले धर्मगुरु (इटली के वैटिकन नगर वासी) को सर्वोपरि मान्यता प्राप्त है। उसके आदेश ईश्वरीय वाक्य तुल्य माने जाते हैं। बाइबिल यद्यपि ईसाइयों की दृष्टि में ईश्वरीय आदेश है तथापि वहाँ पोप की मान्यता बाइबिल से भी अधिक है।

जब पोप के पाखण्ड तथा अत्याचार बढ़ गए तो लूथर ने स्वामी दयानन्द की भाँति क्रान्ति का प्रवचन किया और एकमेव बाइबिल को ही मान्य किया तथ धर्मगुरु पोप के एकतंत्री आदेशों की खिलाफत की। उसका कहना था कि ईश्वर और उसके भक्त के बीच किसी पोप के जैसे बिचौलिये की कोई जरूरत नहीं जो सिफारिशी पत्र देकर उसे स्वर्ग में स्थान दिलाने की सिफारिश करता है। पोप की तानाशाही इतनी बढ़ गई कि गरीब व्यक्ति को भी धन देकर पोप के हस्ताक्षर प्राप्त सिफारिशी पत्र प्राप्त करना पड़ता था। यह एक प्रकार से धर्म के नाम पर व्यापार था। इसलिए कि धनी और गरीब पोप की इच्छित राशि देकर स्वर्ग में अपना स्थान आरक्षित करवाते थे। इस पाखण्ड के विरोध में लूथर का कहना था कि मात्र बाइबिल की शिक्षाओं का अनुपालन और मसीह की नैतिक शिक्षाओं पर चलने से ही ईसाई मतावलम्बी का इहलोक और परलोक सुधरेगा। पोप जैसे बिचौलिये की अनिवार्यता इस प्रकार खत्म होने लगी।

मार्टिन लूथर के इस विद्रोही स्वर को देखकर पोप ने रोम के पाँचवे सम्राट चार्ल्स के समक्ष उसकी शिकायत की और उसे धर्मद्रोही कहकर उसका बहिष्कार करवाया। बुद्ध और दयानन्द की भाँति लूथर ने भी अपने विचारों के प्रचार-प्रसार के लिए लोक भाषा जर्मन को अपनाया। उसने स्वयं मूल हिब्रू में लिखित बाइबिल का जर्मन भाषा में अनुवाद किया और इस ग्रन्थ को जन-जन तक पहुँचाया। इस प्रकार उन धर्माचार्यों का महत्व कम हुआ जो अपने धर्मग्रन्थ की व्याख्या का एकाधिकार रखते थे। इसी क्रम में इंग्लैण्ड के राजा ने बाइबिल का अंग्रेजी में अनुवाद करवाया तथा स्वयं तथा अपने देश को लूथर द्वारा प्रवर्तित प्रोटैस्टेंट मत का अनुयायी घोषित किया। स्वामी दयानन्द ने भी देशी नरेशों को वैदिक धर्म अपनाने की प्रेरणा दी थी। **प्रोटैस्टेंट का अर्थ पाखण्डों का प्रोटेस्ट करने वाला।**

पोप ने विश्वास की अपेक्षा कर्म को घटिया बताया था तथा कहा- इसके प्रतिकार में लूथर की घोषणा थी। प्रकारान्तर में यह गीतोक्त कर्म सिद्धान्त की प्रतिष्ठा ही थी। लूथर ने इस बात पर बल दिया कि विवाहित पुरुष और स्त्रियाँ भी धर्मयाजक बन सकते हैं। तब तक भिक्षु तथा भिक्षुणी के लिए अविवाहित रहकर पादरी तथा नन का एकांगी जीवन जीना अनिवार्य था। इस प्रकार थोपे गये ब्रह्मचर्य के अस्वाभाविक और अप्राकृतिक चलन का विरोध कर सामान्य गृहस्थ रहते हुए धर्म प्रचार करने की आज्ञा देना लूथर की महान् क्रान्ति थी। उसकी इस व्यवस्था से पादरियों और बलात् ब्रह्मचर्य पालन के लिए विवश की जाने वाली ननूस का प्रचरित

दुराचार बंद हो गया। ईसाई धर्म में पादरी के समक्ष पाप को स्वीकार के पाखण्ड का लूथर ने विरोध किया। उसका कहना था कि स्वयं को पापी मानने और स्वयंकृत पाप की मौखिक स्वीकृति का कोई अर्थ नहीं है। दृढ़तापूर्वक पाप का त्याग ही मनुष्य के लिए हितकारी है। जब पोप ने सेंट पीटर का चर्च बनाने के लिए लोगों से दान देने की अपील की तो लूथर का कहना था कि अशेष धन का स्वामी पोप अपने खजाने को ही चर्च निर्माण में क्यों नहीं लगाता?क्रोध में आकर पोप ने लूथर का सामाजिक बहिष्कार करने का आह्वान किया जो निष्फल रहा। पोप ने उसके साहित्य पर भी प्रतिबंध लगाया जो कभी क्रियान्वित नहीं हो सका। इस प्रकार मूल बाइबिल की शिक्षा तथा कालान्तर में धर्म में आये पाखण्ड अनाचार तथा अंधविश्वास की खिलाफत करने वाले लूथर द्वारा प्रवर्तित प्रोटैस्टेंट मत विभिन्न देशों में अपनी जड़ जमा सका। १५ फरवरी १५४६ को चौसठ वय प्राप्त कर यह महान् धर्म सुधारक स्वल्प बीमारी के पश्चात् परलोक सिधार गया। उसे अपने देश में ही भूमिस्थ किया गया। जर्मनी के ड्रैसडन नगर के एक आलीशान चौक में इस महान् धर्म सुधारक की भव्य प्रतिमा आज भी लोगों को धर्म के वास्तविक स्वरूप को अपनाने तथा साम्प्रदायिक पाखण्डों से विरत् रहने की प्रेरणा देती है। स्वामी दयानन्द की इस महापुरुष को दी गई श्रद्धांजलि स्वयं उनकी उदारता, सदाशयता तथा महानता प्रदर्शित करती है।

३/५ शंकर कॉलोनी
श्री गंगानगर -३३५००१

❑❑❑

श्री बी. एल. अग्रवाल
संरक्षक-न्यास

नवसंवत्सर, आर्य समाज स्थापना दिवस व श्री रामनवमी के शुभ अवसर पर विश्वभर के सभी आर्यजनों को हार्दिक शुभकामनाऐं

संरक्षक मण्डल - सत्यार्थ सौरभ (₹११,०००)

स्वामी (डॉ.) ओमानन्द सरस्वती, श्रीमान् आनन्द कुमार आर्य, श्री आर.डी. गुप्त, श्री भवानी दास आर्य, श्री सुरेश चन्द्र अग्रवाल, श्री रतिराम शर्मा, श्री दीनदयाल गुप्त, श्री बी.एल. अग्रवाल, श्री कै. देवरत्न आर्य, श्री चन्दूलाल अग्रवाल, श्री मिठाईलाल सिंह, श्री नारायण लाल मित्तल, श्री सुधाकर पीयूष,श्रीमती शारदा गुप्ता, आर्य परिवार संस्था कोटा, श्रीमती आभाआर्या, गुप्त दान दिल्ली, आर्यसमाज गाँधीधाम, गुप्तदान उदयपुर, श्री राजकुमार गुप्ता एवं सरला गुप्ता, श्री मोती लाल आर्य, श्री लक्ष्मण सराफ, श्रीमती पुष्पा गुप्ता, श्री जयदेव आर्य, श्री श्रवण कुमार गुप्ता, श्रीमती सरोज वर्मा, श्री विवेक बंसल, श्री दीपचंद आर्य, श्री एम.पी. सिंह, प्रो. आर.के.एरन, श्री खुशहालचन्द आर्य, श्री विजय तायलिया, श्री वीरेन्द्र मित्तल एवं

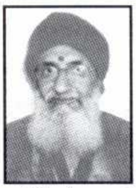
स्वामी (डॉ.) आर्येशानन्द सरस्वती
पिण्डवाडा

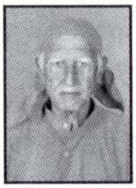
स्वामी प्रवासानन्द सरस्वती
सायला गुजरात

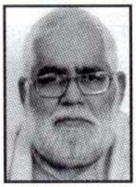
स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती
दिल्ली

श्री राव हरिश्चन्द्र आर्य
नागपुर

श्री लोकेश चन्द्र टाक
बैंगलोर

श्री रघुनाथ मित्तल
भीलवाड़ा

श्रीमती गायत्री पंवार
जयपुर

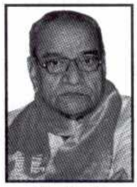
श्री प्रधान जी
मध्यभारतीय आ. प्र. सभा

श्री प्रहलादकृष्ण एवं श्रीमती प्रभा भार्गव
कोटा

श्री भारतभूषण गुप्ता
नोएडा

श्री कृष्ण चौपड़ा
यू.के.

श्री नरेश कुमार राणा
नई दिल्ली

डॉ. मोतीलाल शर्मा
जयपुर

डॉ.वेद प्रकाश गुप्ता
कोटा

श्री वीरसुखी
लॉग्स आइलैण्ड, अमेरिका

श्री एम. विजेन्द्र कुमार टाक
बैंगलुरू

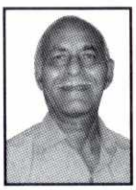
डॉ. अमृतलाल तापड़िया
उदयपुर

श्री विकास गुप्ता
नोएडा

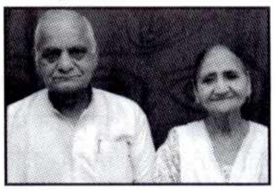
श्री रामप्रकाश छाबड़ा एवं श्रीमती कलावती छाबड़ा
दिल्ली

आर्य समाज
हिरण मगरी
से.४,
उदयपुर

आर्य समाज हिरण मगरी
उदयपुर

डी.ए.वी.
एकेडमी
टाण्डा

श्री आनन्द कुमार आर्य
टाण्डा

मिश्रीलाल
आर्य कन्या
इण्टर कॉलेज
टाण्डा

श्री आनन्द कुमार आर्य
टाण्डा

रामायण कहने को एक आर्य महाराजा का जीवन चरित्र है, परन्तु वास्तव में यह संसार के मलों को नाश करने वाली अग्नि, अन्धकार में प्रकाश, स्त्रियों का धर्म, पुरुषों का पौरुष, ब्राह्मणों का ब्रह्मतेज, क्षत्रियों का क्षात्रधर्म, वैश्यों का धन और शूद्रों का सेवा धर्म है।

हम जानते हैं कि गृहस्थाश्रम अन्य सभी आश्रमों का आधार है और रामायण गृहस्थ में प्रवेश करने वाले नर-नारियों का यह सुख दीपक है। इसकी ज्योति को हाथ में लेकर पुरुष

रामायण की पृष्ठभूमि

रामनवमी पर्व पर विशेष

श्रीपाद दामोदर सातवलेकर

यदि जीवन मार्ग देख देखकर चले तो हो नहीं सकता कि किसी समय वह जीवन युद्ध में पराजय प्राप्त करे। कई लोग इसे एक प्रकार की रसायन कहते हैं जिसके विधिवत् सेवन से न केवल पुरुष मृत्यु व बुढ़ापे से बच जाता है बल्कि मरा हुआ और निराश-निष्प्राण भी जीवित और जागृत हो सकता है। यदि जातियाँ इसे सेवन करें तो वह कभी भी अपने अन्त को नहीं देख सकतीं। राष्ट्र जीवन का यह प्रेरणा स्रोत है।

> "संसार का इतिहास पढने वाले कहते हैं कि वेदों का प्रचार हट जाने पर आर्य जाति को यदि किसी रसायन ने जीवित रखा है तो वह रामायण है। "

आर्य वंश के धर्म कर्म और संस्कृति का वह प्रबल प्रवाह, जिसने एक दिन जगत् के बड़े बड़े सन्मार्ग विरोधी भूधरों का दर्प दलन कर उन्हें रज में परिणित कर दिया था और इस परम पवित्र आर्य जाति का वह विश्व व्यापक प्रकाश जिसने एक समय जगत् में अन्धकार का नाम तक न छोड़ा था- अब कहाँ है?इस गूढ एवं मर्मस्पर्शी प्रश्न का यही उत्तर मिलता है कि वह सब भगवान् महाकाल के महापेट में समा गया।

जो अपनी व्यापकता के कारण प्रसिद्ध था, अब उस प्रवाह का प्रकाश भारतवर्ष में कहां हैं?वृहत्तर भारत, चक्रवर्ती आर्य साम्राज्य इन शब्दों का नाम ही अवशिष्ट रह गया है। कालचक्र में बल, विद्या, तेज, प्रताप आदि सबका चकनाचूर हो चुका है इस अवस्था में भी उनका कुछ कुछ चिह्न वा नाम जो बना हुआ है यही डूबते हुए भारत वर्ष का सहारा है और यही वृद्ध भारत के हाथ की लकड़ी है।

जहाँ महा-महा महीधर लुढ़क जाते थे और अगाध अतलस्पर्शी जल था, वहाँ अब पत्थरों में दबी हुई एक छोटी सी किन्तु सुशीतल वारिधारा बह रही है, जिससे भारत के विदग्ध जनों के दग्ध हृदय का यथा कथंचित् संताप दूर हो रहा है। जहाँ महाप्रकाश में दिग्दिगन्त उद्भासित हो रहे थे, वहाँ एक अन्धकार से घिरा हुआ स्नेह शून्य प्रदीप टिमटिमा रहा है जिससे कहीं-कहीं भूभाग प्रकाशित हो रहा है वह है-राम चरित। **राम चरित्र ही अब केवल हमारे संतप्त हृदय की शांति का आधार है और राम नाम ही हमारे अन्धे घर का दीपक है।**

यह सत्य है जो प्रवाह यहाँ तक क्षीण हो गया है कि पर्वतों को उथल देने की जगह आप प्रतिदिन पाषाणों से दब रहा है और लोग इस बात को भूलते जा रहे हैं कि कभी यहाँ भी एक प्रबल नद प्रवाहित हो रहा था, तो उसकी आशा परित्याग कर देनी चाहिए । जो प्रदीप स्नेह से परिपूर्ण नहीं है तथा जिसकी रक्षा का कोई उपाय नहीं है और प्रतिकूल वायु चल रही है वह कब तक सुरक्षित रहेगा?वायु के एक ही झोंके में उसका निर्वाण हो सकता है।

किन्तु हमारा वक्तव्य यह है कि यदि वह प्रवाह गंगा की निर्मल धारा की तरह बढ़ने लगे, तो क्या सामर्थ्य है कि कोई उसे रोक सके?क्योंकि वह प्रवाह कृत्रिम प्रवाह नही है, भगवती वसुन्धरा के हृदय का प्रवाह है, जिसे हम स्वाभाविक प्रवाह भी कह सकते हैं।

आज संस्कृति के जिस दीपक को हम निर्वाणप्राय देखते हैं निःसंदेह उसकी दशा शोचनीय है और उससे अन्धकार निवृत्ति की आशा करना दुराशा मात्र है, परन्तु यदि हमारी उसमें ममता हो और वह फिर सत्यता के स्नेह से भर दिया जाय तो स्मरण रहे कि यह दीप वही प्रदीप है जिसने कभी विश्वभर को आलोकित किया था।

कभी हम लोग भी सुख से दिन बिता रहे थे, कभी हम भी भूमण्डल पर विद्वान् और वीर शब्द से पुकारे जाते थे, कभी हमारी कीर्ति भी दिग्दिगंत व्यापिनी थी, कभी हमारे जय जयकार से भी आकाश गूँजता था और कभी बड़े-बड़े सम्राट हमारे कृपा कटाक्ष की भी प्रत्याशा करते थे- इस बात का

स्मरण करना भी अब हमारे लिए दुस्साहस हो रहा है। हम लोगों में भी एक दिन स्वदेशभक्त उत्पन्न होते थे, हममें सौभ्रातृ और सौहार्द का अभाव न था, गुरुभक्ति और पितृभक्ति हमारा नित्यकर्म था, शिष्टपालन और दुष्टदमन ही हमारा कर्तव्य था। अधिक क्या कहें- कभी हम भी ऐसे थे कि जगत् का लोभ हमें अपने कर्तव्य से नहीं हटा सकता था।

महाराज दशरथ का पुत्र-स्नेह, श्री रामचन्द्र जी का पितृ-भक्ति, लक्ष्मण और शत्रुघ्न की भ्रातृ-भक्ति भरत जी का स्वार्थ-त्याग, वशिष्ठ जी का प्रताप, विश्वामित्र का आदर्श,

ऋष्यश्रृंग का तप, जानकी जी का पतिव्रत, हनुमान जी की सेवा, विभीषण की शरणागति और रघुनाथजी का कठोर कर्तव्य किसको स्मरण नहीं है?जो अपने रामचन्द्र को जानता है वह अयोध्या मिथिला को कब भूला हुआ है । वह राक्षसों के अत्याचार, ऋषियों के तपोबल और क्षत्रियों के धनुर्वाण के फल को अच्छी तरह जानता है। यह एक अकाट्य सचाई है कि ऐसा पावन और शिक्षाप्रद चरित्र अन्यत्र दुर्लभ है।

आठ सौ वर्ष हिन्दुओं के सिर पर कृपाण चलती रही पर रामचन्द्र जी की जय तब भी बन्द न हुई। सुनते हैं कि ओरंगजेब ने असहिष्णुता के कारण एक बार कहा था कि हिन्दुओ! अब तुम्हारे राजा रामचन्द्र नहीं हैं, हम हैं। इसलिए रामचन्द्र की जय बोलना राजद्रोह करना है। औरंगजेब का कहना किसी ने न सुना। उसने रामभक्त हिन्दुओं का रक्तपात किया सही, पर रामचन्द्र जी की जय को न बंद कर सका। कहाँ है वह अभिमानी?लोग अब राम की कीर्ति के विश्व ब्रह्माण्ड को देखें और उस औरंगजेब की मृण्मय समाधि को देखें और फिर कहें कि राजा कौन है ?

रामायण की पृष्ठभूमि

रामायण की कथा सूक्ष्म रीति से विचार करने पर यह बात स्वयं प्रकट होती है कि इस रामायण की कथा में-

१. देव जाति २. आर्य जाति जिसको नर या मानव कहा गया है। ३. वानर जाति ४. राक्षस जाति, इन चार मानव वंशों का सम्बन्ध आया है अर्थात् इनका राष्ट्रीय संघर्ष इस ग्रन्थ में वर्णन किया गया है।

दशरथ राजा के अश्वमेध में नेताओं की एक बड़ी सार्वभौमिक परिषद् हुई थी। इस परिषद् में रावण के पाशवीशक्ति पर खड़े हुए साम्राज्य का नाश करने का प्रस्ताव सबकी सहमति से स्वीकृत किया गया था। इस परिषद् में किस जाति ने इस रावण के वध के संबंध किस कार्य को करना चाहिए, यह भी निश्चित किया हुआ था। इस परिषद में १. देववीर और २. ऋषि प्रमुख कार्यकर्ता थे। आर्य राजा, आर्य नेता पीछे-पीछे रहकर मूक अनुमोदन देने वाले थे। आर्य राजा सम्राट रावण से बहुत ही डरते थे, इसलिए इस अधिवेशन में ये शामिल नहीं हुए थे।

इस सार्वभौमिक परिषद् में वानर-राक्षस नहीं आये थे, इसका कारण यह था कि वानरराज बाली का राक्षसराज रावण के साथ अग्नि साक्षिक सख्य हुआ था। अर्थात् कोई परस्पर पर आक्रमण नहीं करे, दूसरा शत्रु आक्रमण करने लगे तो दोनों मिलकर उसका प्रतिकार करें, यह इस संधि का आशय था। अर्थात् वानर व राक्षस ये परस्पर मित्र राष्ट्र के लोग थे, इस कारण देव और आर्यों की रावण विरोधी परिषद् में वानर, राक्षसों का आना उक्त कारण से असंभव था। इस सार्वभौमिक परिषद् में यह निश्चित हुआ कि वानर राष्ट्र को राक्षस राष्ट्र से अलग करना और उसको आर्य राष्ट्र के उद्दिष्ट कार्य में सहभागी बनाना। इसी उद्देश्य से परिषद् में यह भी निश्चित हुआ कि वानर जाति के तरुण युवकों को विशेष रीति से तैयार किया जावे और यह कार्य ऋषि तथा देव मिलकर करें।

श्री रामचन्द्र जी ने रावण के साथ मित्रता करने वाले बाली का वध किया और सुग्रीव के साथ मित्रता करके सब वानरों को आर्यों के रावण-वध रूप कार्य में सहभागी बनाया । श्री रामचन्द्र जी के इस कार्य का महत्व बड़ा भारी है। कई लोग बालि वध के कारण श्री रामचन्द्र जी को दोष देते हैं, पर यदि बाली का वध न होता तो वानर राक्षसों के साथ मिल जाते और आर्यों की सेना लंका पर हमला करने के लिए रामेश्वर तक नहीं पहुँच पाती क्योंकि किष्किन्धा और रामेश्वर के बीच में वानरों का राज्य था, अतः वानरों का पराभव होने के पूर्व आर्य सेना वहाँ पहुँच ही नहीं सकती और वानरों का राजा बाली तो इतना प्रबल था कि उस अकेले ने ही रावण को भी

परास्त किया था। इसलिए आर्यों के रावण वध रूप महान् कार्य की सिद्धि के लिए बाली का वध करना एक अत्यन्त आवश्यक कर्तव्य था जो श्री रामचन्द्र जी ने किया और अपना मार्ग सरल किया। बाली का वध होने के पूर्व

१. देव जाति+आर्य जाति

२. और वानर जाति+राक्षस जाति

ऐसे दो परस्पर विरोधी संघ थे। श्री रामचन्द्र जी ने बाली का वध करके और वानर जाति को संधि द्वारा जोड़कर ऐसे संघ बनाया।

१. देव+ आर्य+वानर

२. राक्षस

इस तरह घटना बनने के कारण रावण के साथ युद्ध करने के समय भारतीयों का अर्थात् श्री रामचन्द्र जी का बल बढ़ गया और लंकाद्वीपस्थ राक्षसों का बल घट गया। यह उस समय के इतिहास का छोटा सा भाग है। इसका विचार करने से पाठकों को पता लग सकता है कि उस समय किन जातियों का कैसा पारस्परिक संबंध था और आर्यों के दिग्विजय के लिए बाली का वध करने की अत्यन्त आवश्यकता क्यों थी। रामायण कथा समझने के लिए इस संघर्ष का पता होने तथा इस पृष्ठभूमि को समझने की अत्यन्त आवश्यकता है। रामायण के वर्णन को पढ़ने से यह बात स्वयं स्पष्ट हो जाती है कि उस समय देववीर और आर्यवीर ये दोनों रावण से बहुत ही डरते थे। श्री रामचन्द्र जी के पूर्व काल में हेहयदेशीय कीर्तिवीर्य आदि राजाओं ने ब्राह्मणों के कई आश्रम लूटे और नष्ट किए। इन आश्रमों में विपुल धन था। उसकी प्राप्ति की इच्छा से ही इन क्षत्रियों ने उक्त आश्रम लूटे थे । इन आश्रमों में समस्त जाति के बालक बिना शुल्क पढ़ाये जाते थे इसलिए आश्रमों को उध्वस्त करने के कारण समस्त जाति के लोग क्षत्रियों के विरुद्ध खड़े हुए। इस समय परशुराम नामक ब्राह्मण युवक इन दुराचारी क्षत्रियों का विरोध करने वाला प्रबल नेता खड़ा हुआ और परशुराम के नेतृत्व में क्षत्रियों के वध करने का कार्य शुरू हुआ। २१ बार क्षत्रियों का संहार किया गया। अर्थात् २१ बार परशुराम ने क्षत्रियों पर हमले किए और जो सामने आये उनका वध किया । इन २१ बार के युद्धों में मिलकर १२०० राजा और लाखों वीर मर चुके थे। इस तरह लड़ने वाले वीरों का संहार होने के कारण आर्यावर्त में रावण के साथ युद्ध करने के लिए समर्थ एक भी वीर नहीं था। इस कारण रावण जो परद्वीपस्थ राजा यहाँ आया, तो यहाँ के राजा उससे डरते थे, देववीर भी भयभीत होते थे यहाँ तक आर्य जाति हतबल हुई थी कि ताटिका जैसी अकेली राक्षसी स्त्री भी भारतीयों का कष्ट देती हुई निभर्यता के साथ यहाँ रह सकती थी। इतना घोर अत्याचार होने पर एक भी देववीर अथवा आर्य वीर रावण का विरोध करने का कार्य करने का साहस नहीं करता था।

अब विश्वामित्र ऋषि अपने यज्ञ की रक्षा करने के लिए राजा दशरथ के पास राम लक्ष्मण को माँगने के लिए आये थे उस समय दशरथ के भाषण में रावण का यह प्रचण्ड डर स्पष्ट दिखाई दिया था। इस कारण इस समय देववीर या आर्यवीर के द्वारा रावण का प्रतिकार होना सर्वथा असंभव था। अयोध्या की सार्वभौमिक परिषद् में रावण का नाश करने का प्रस्ताव सर्वसम्मति से स्वीकृत हुआ। पर इस परिषद् में यज्ञ में उपस्थित होने कभी न तो आर्य राजा आये थे और ना ही आर्य नेता पधारे थे इसका कारण उक्त डर था। अतः रावण वध का कार्य करने के लिए नवयुवकों में से किसी को नये वीरत्व की शिक्षा देकर तैयार करने का बड़ा कार्य ऋषियों को ही अपने सिर पर लेना पड़ा था। इससे रावण का भय उस समय कितना था, इसकी कल्पना हो सकती है।

इस समय वानर राष्ट्र बड़ा बलशाली था। रावण को वानरराजा बाली ने परास्त किया था। अतः रावण बाली से बहुत डरता था। इस कारण रावण ने बाली के साथ मित्रता या संधि की थी और वानर राष्ट्र को अपने पक्ष में खींच लिया था। इतना ही नहीं परन्तु वानर राज बाली की सम्मति से

अपनी राक्षस सेना के १४००० राक्षस वीर खर, दूषण और त्रिशरा के नेतृत्व में नासिक प्रान्त में जनस्थान में रख दिए थे। इसका हेतु केवल यही था कि आर्यावर्त के आर्यवीर और वानर राष्ट्र के वानर वीर कभी आपस में संधि करके मिलने न पावें और सदा के लिए एक दूसरे से दूर ही रहें। इन दोनों के मेल मिलाप से राक्षसों के साम्राज्य का नाश होगा, इस बात को रावण अच्छी तरह जानता था। अतः उसने इस प्रकार

जनस्थान में अपनी सेना रख दी थी, जो दोनों को विभक्त रखती थी।

यज्ञ के मिष से देववीरों और आर्यवीरों के सम्मेलन आर्यावर्त में बारम्बार होते थे। पर नासिक प्रान्त में रखे राक्षस सैन्य का नाश करने, वानरों के साथ मित्रता करने और इस तरह अपना बल बढ़ाकर रावण पर चढ़ाई करने का कार्य श्री रामचन्द्र जी तक किसी ने भी किया नहीं था। रावण के भय से देववीर और आर्यवीर काँप रहे थे। इसलिए प्रारम्भ में श्री रामचन्द्र जी की भी सहायता इनमें से किसी ने नहीं की। पर जब श्री रामचन्द्र जी की निःसंदेह विजय होगी, ऐसा स्पष्ट दिखने लगा तब इन्द्र ने उनकी सहायता करने का धैर्य दिखाया। इस समय की राजकीय अवस्था की ठीक ठीक कल्पना होने से यह विषय स्पष्ट हो जायेगा।

ऋषि लोग प्रारम्भ से ही रामचन्द्र की सहायता जहाँ तक बन सके, वहाँ तक प्रयत्न करके करते थे इतना ही नहीं, परन्तु राम जन्म के पूर्वकाल से ही रावण वध रूप बड़ा राष्ट्र कार्य करने करवाने का प्रयत्न उन्होंने चलाया था।

ऋष्यशृंग द्वारा पुत्रेष्टियज्ञ, महर्षि विश्वामित्र का राम लक्ष्मण को लेने आना, महामुनि वशिष्ठ की विशेष प्रेरणा से राम लक्ष्मण का उनके साथ जाकर शस्त्र अस्त्रादि का विशेष शिक्षण और राम का वन जाना तथा अगस्त्य ऋषि के विज्ञान केन्द्र से नवीनतम शस्त्र अस्त्रादि प्राप्त करना उसी पूर्व नियोजित योजना के अंग हैं।

वानर जाति की नई पीढ़ी में आर्य जाति के प्रति आत्मीयता और राक्षसों के प्रति घृणा उत्पन्न करने के विचार से ही अगस्त्य आदि ऋषियों ने दंडक वन में अपने अनेकों आश्रम 'जागृयाम पुरोहिताः' के रूप में इस वेदादेश के पालनार्थ आर्य राष्ट्र के जागरूक ऋषियों, देव राष्ट्रों के देवों द्वारा राम लक्ष्मण हनुमान आदि के रूप में क्षात्रधर्म के पुनर्जागरण का योजनाबद्ध पुण्य प्रयास किया गया।

राम-रावण युद्ध वस्तुतः दो राष्ट्रों का युद्ध था। यह कहना और भी अधिक समीचीन होगा कि यह युद्ध दो संस्कृतियों का युद्ध था। रामायण, आर्य संस्कृति की दिग्विजय और आसुरी सभ्यता के पराभव का ऐतिहासिक वृत्त है।

इस प्रकार देवों की योजनानुसार महामानव राम द्वारा वानर जाति के सहयोग से राक्षसों का पराभव करके वर्णाश्रम धर्मयुक्त सांस्कृतिक आर्य साम्राज्य की संस्थापना ही रामायण की पृष्ठभूमि है।

बाल वाटिका

अतिथि यज्ञ

संस्कृत के विद्वान् महाकवि माघ को कौन नहीं जानता। उन पर सरस्वती और लक्ष्मी दोनों की ही कृपा थी। 'शिशुपाल वध' जैसी अनेक उत्कृष्ट रचनाओं के रचयिता माघ को राजा की असीम अनुकम्पा मिलती ही रहती थी। माघ में एक खास बात और थी। वे परोपकारी और उदारमना भी थे। जो उनके द्वार पर आता, कभी खाली हाथ नहीं लौटता था। एक बार ऐसा हुआ कि लोगों को सहायता देते देते उनका सारा धन समाप्त हो गया। वे स्वयं अति निर्धन हो गए। फिर भी उनका मन पूर्ववत् उदार बना रहा। एक दिन की बात है । वे अपने घर के अहाते में बैठे थे और उनकी पत्नी अंदर कमरे में सो रही थी। माघ वहाँ बैठे-बैठे काव्य रचनाओं में अनुरक्त थे। तभी एक निर्धन ब्राह्मण उनके पास आकर अत्यन्त विनीत स्वर में बोला-' कविराज! आपका नाम सुनकर मैं अवंतिका से चलकर आया हूँ। आप मेरी आर्थिक मदद कीजिए। माघ बोले'बन्धु तुम मेरे पास ऐसे समय में आये हो, जब मैं स्वयं निर्धन व साधनहीन हूँ। तुम्हें कुछ देने की स्थिति में नहीं हूँ।'

यह सुनकर वह ब्राह्मण बहुत निराश हुआ। इसे अपना दुर्भाग्य मानकर वह लौटने लगा। संवेदनशील माघ ने ब्राह्मण के चेहरे पर व्यक्त हो रही व्यथा देखी तो उनसे सहन नहीं हुई। उन्होंने उसे थोड़ा रुकने का इशारा किया। वे घर के भीतर गए। शयनकक्ष में उनकी पत्नी सो रही थी। उन्होंने पत्नी की ओर देखा। उसके हाथ में अंतिम चिह्न के रूप में सोने के कंगन बचे हुए थे। माघ ने धीरे से अपना हाथ पत्नी के हाथ की ओर बढ़ाया। उन्होंने आहिस्ता से एक हाथ का कंगन निकाल लिया। वे वहाँ से पलटकर जाने लगे कि उनकी पत्नी जाग गई। वह चौंककर बोली कौन है? लज्जा महसूस करते माघ थोड़ी देर चुप ही रहे। यह भी तो नहीं कह सकते थे कि मैं हूँ तुम्हारा पति। क्योंकि उन्होंने जो काम किया था वह पति का काम नहीं था। यह तो चौर्य कर्म था। थोड़ी देर बाद उनके मुख से निकला- मैं चोर हूँ, देवी। पत्नी तब तक सब कुछ समझ गई थी। वह यह भी जान गई थी कि अवश्य ही महाकवि के सम्मुख कोई विकट स्थिति आ गई होगी! उसे इस बात का अहसास हो गया था कि उन्होंने उसके हाथ से कंगन निकाला है, सो वह बोली 'महामना, पराई वस्तु लेने वाला व्यक्ति चोर हुआ करता है। मैं आपकी अर्द्धांगिनी हूँ। अतः आपने अपनी ही वस्तु ली है। इसलिए ऐसे शब्द कहकर मेरे मन को आहत नहीं करें।' तब पति ने अवंतिका से आये ब्राह्मण की दयनीय दशा का वर्णन किया। पति के मुख से उसकी कथा-व्यथा सुनकर पत्नी और भी द्रवित हो गई। झट से दूसरे हाथ का कंगन भी निकाल कर देते हुए वह बोली 'आर्य पुत्री का विवाह है तो वह धूमधाम से ही होना चाहिए। इन कंगनों की हमसे अधिक जरूरत तो अवंतिका से आये विप्रवर को है। उनसे कहिए कि इस समय तो हम यही योगदान दे सकते हैं, बाहर बैठा ब्राह्मण पति-पत्नी के सभी संवाद सुन रहा था। माघ ने बाहर आकर दोनों कंगन ब्राह्मण को दे दिए। ब्राह्मण की आँखों में आँसू आ गए। वह उन्हें असीम आशर्वाद देते हुए चला गया।

साभार -पाथेय कण

समाचार

महर्षि दयानन्द सरस्वती की 189 वीं जयन्ती समारोहपूर्वक आयोजित

दिनांक ७ मार्च को आर्य समाज,हिरणमगरी,उदयपुर में श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास के कार्यकारी अध्यक्ष श्री अशोक आर्य की अध्यक्षता में ऋषिवर का जयन्ती समारोह भव्यता के साथ मनाया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि स्वामी आर्यानन्द जी थे। इस अवसर पर होम साइन्स

कॉलेज उदयपुर की पूर्व डीन प्रो.पुष्पा गुप्ता, प्रो. डॉ. अमृतलाल तापड़िया एवं श्री इन्द्रप्रकाश यादव ने सभा को सम्बोधित करते हुए महर्षि दयानन्द के योगदान को कृतज्ञतापूर्वक स्मरण किया।

– श्रीमती ललिता मेहरा,मंत्री,आर्य समाज,हिरणमगरी

'मूलशंकर से दयानन्द की यात्रा' का मंचन

उदयपुर। १० मार्च २०१३। श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास की ओर से नगर के सभी आर्य समाजों का सामूहिक ऋषि बोधोत्सव भजनों,प्रेरक उद्बोधनों एवं नाटक के साथ रविवार को नवलखा महल में सम्पन्न हुआ। देवयज्ञ से आरम्भ बोधोत्सव में न्यास के कार्यकारी अध्यक्ष श्री अशोक आर्य ने कहा कि महर्षि दयानन्द सरस्वती का सारा जीवन सत्य को समर्पित था। आर्यजन चिन्तन करें कि सत्य की प्रतिष्ठा में वे कितनी दूर तक जा सकते हैं। मुख्य वक्ता प्रो. प्रेमचन्द गुप्त ने बताया कि ईश्वर के गुणों के चिन्तन, ध्यान एवं धारण करने से ही हम साहस, बल एवं अन्य लाभ प्राप्त कर सकते हैं। इस अवसर पर डी.ए.वी.पब्लिक स्कूल, फतहपुरा, उदयपुर के

विद्यार्थियों द्वारा नाटक 'मूलशंकर से स्वामी दयानन्द की यात्रा' का मंचन कर महर्षि दयानन्द सरस्वती के जीवन की प्रेरक घटनाओं को प्रभावी रूप से प्रस्तुत किया गया। नाटक की निर्देशिका श्रीमती प्रीता मोहन एवं श्रीमती सुनीता चक्रवर्ती व सहयोगी विकास बंसल एवं श्रीमती वन्दना चौधरी थे। आभार न्यास के उपमंत्री प्रो.डॉ.अमृतलाल तापड़िया ने ज्ञापित किया। संचालन भूपेन्द्र शर्मा ने किया। बोधोत्सव के समापन पर न्यास के पुरोहित श्री नवनीत आर्य द्वारा शांतिपाठ करवाया गया।

दिनांक २१ अप्रैल (२०१३) को आर्य समाज, किशनपोल बाजार, जयपुर में स्वतंत्रता सेनानी (स्वर्गीय श्री हरि सिंह जी आर्य) स्वामी सेवानन्द सरस्वती की जयन्ती पर वर्णव्यवस्था पर वेद व्याख्यान माला का आयोजन होगा। इसी अवसर पर 'वैदिक वर्णाश्रमव्यवस्था' पुस्तक का विमोचन करके सभी को निःशुल्क वितरित किया जावेगा। **न्यास मंत्री- श्री ओ. पी. वर्मा**

दयानन्द कन्या विद्यालय, हिरणमगरी की बेबसाइट का उद्घाटन

महर्षि जयन्ती के अवसर पर दयानन्द कन्या विद्यालय की बेबसाइट का उद्घाटन श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास के कार्यकारी अध्यक्ष श्री अशोक आर्य द्वारा किया गया। इस अवसर पर विद्यालय के संस्थापक स्वर्गीय श्री जितेन्द्र पाल शर्मा के योगदान को स्मृत किया गया। कार्यक्रम का संचालन आर्य समाज हिरणमगरी, के उपमंत्री श्री भूपेन्द्र शर्मा ने किया। आर्य समाज की उप प्रधान श्रीमती शारदा गुप्ता ने सभी आर्यों को धन्यवाद ज्ञापित किया। **–श्री भूपेन्द्र शर्मा**

गुरुवर विरजानन्द का भव्य स्मारक बनाया जायेगा

करतारपुर में स्थापित गुरुकुल करतारपुर की पहल पर महर्षि दयानन्द सरस्वती के गुरु दण्डी श्री स्वामी विरजानन्द जी का भव्य स्मारक बनाने का निश्चय किया गया है। इस हेतु पंजाब सरकार ने गुरुकुल को भूमि देने का निश्चय कर लिया है। आर्यजनों से अपेक्षा है कि इस पवित्र कार्य में अपना सहयोग प्रदान करें।

–डॉ.स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती,कुलपति,गुरुकुल करतारपुर

आर्य पुत्र बने राजस्थान के लोकायुक्त

आर्य पुत्र न्यायाधिपति श्री सज्जन सिंह कोठारी जी की राजस्थान के लोकायुक्त के रूप में नियुक्ति। शपथ दिलाते हुए राजस्थान की राज्यपाल महामहिम श्रीमती मारग्रेट अल्वा। गौरवान्वित न्यास तथा सत्यार्थ सौरभ परिवार की ओर से हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ।

शोक संदेश

आदरणीय श्री धर्म सिंह जी कोठारी की धर्म पत्नी व न्यायाधिपति श्री सज्जन सिंह जी कोठारी जी की माता श्री का निधन जयपुर स्थित उनके निवास पर हो गया। श्री धर्म सिंह जी वर्षों परोपकारिणी सभा से जुड़े रहे तथा सभा के परिष्कृत सत्यार्थ प्रकाश (३६ वाँ संस्करण) के सम्पादन में उन्होंने अत्यन्त परिश्रम किया था तथा वे उदयपुर से प्रकाशित सत्यार्थ प्रकाश मानक संस्करण के सम्पादक मण्डल के भी सदस्य रहे। स्वर्गीया माताजी ने सम्पूर्ण परिवार में वैदिक संस्कारों का सफलता पूर्वक बीज वपन किया। उनके निधन पर न्यास तथा सत्यार्थ सौरभ परिवार की ओर से हार्दिक सम्वेदना।

(स्व.) श्री छोटूसिंह जी आर्य की धर्मपत्नी व श्री अशोक आर्य, श्री प्रदीप आर्य (अध्यक्ष- नगर विकास प्रन्यास, अलवर) की माता ममतामयी शारदा देवी जी का निधन उनके निवास स्थान पर हो गया। १ मार्च २०१३ को आयोजित शोक सभा में महाशय धर्मपाल जी, भँवर जितेन्द्र सिंह, रक्षा राज्य मन्त्री, भारत सरकार सहित अनेक गणमान्य जनों ने स्वर्गीया माता जी के प्रति श्रद्धांज्जलि अर्पित की। न्यास व सत्यार्थ सौरभ परिवार की ओर से हार्दिक सम्वेदना।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा (स्वामी अग्निवेश ग्रुप) के मंत्री श्री कैलाश नाथ सिंह जी के निधन पर न्यास तथा सत्यार्थ सौरभ परिवार हार्दिक सम्वेदना प्रकट करता है।

हलचल

भूत मिर्ची अलग प्रजाति ही है।

डिफेंस रिसर्च लेबोरेटरी तेजपुर ने दुनिया की सबसे तीखी मिर्च भूत जोलोकिया का नया रासायनिक नाम दर्ज किया है। देश के उत्तर पूर्व में मिलने वाली इस मिर्च को अब कैप्सीकम असामिकम कहा जाएगा। सबसे पहले असम में मिलने के कारण इसे असामिकम नाम दिया गया है। इसकी पत्तियों, फल और तने के अध्ययन से इसे अलग प्रजाति माना गया है। यह एक मिर्च 400 लोगों के लिए बनाए गए खाने को तीखा करने में पर्याप्त है। 2009 में डीआरडीओ वैज्ञानिकों ने इस मिर्च को हैंड ग्रेनेड में इस्तेमाल करने की सलाह दी थी।

डेढ़ हजार साल पहले का अस्पताल मिला

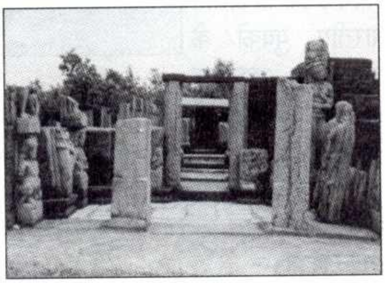

छत्तीसगढ़ की राजधानी रायपुर से लगभग सौ कि.मी. पूर्व में स्थित सिरपुर में एक छठी शताब्दी का अस्पताल मिला है। भारतीय भू-वैज्ञानिक सर्वेक्षण विभाग द्वारा किए जा रहे उत्खनन में यह सामने आया है कि इस प्राचीन चिकित्सालय में रोगियों को भर्ती करने की व्यवस्था थी, आयुर्वेदिक दवाएँ भी यहाँ बनती थीं तथा अत्याधुनिक तरीके की सर्जरी भी यहाँ होती थी। यह अस्पताल एक विशाल मंदिर के क्षेत्र में बना है।

महानदी के किनारे बसा सिरपुर कभी शक्तिशाली सालवाहन राजाओं का केन्द्र था। चीनी यात्री व्हेनसांग ने भी अपनी यात्रा–वर्णन में सिरपुर का उल्लेख किया है। यहाँ खुदाई का काम सन् १८७२ में शुरू किया गया था और उस समय खुदाई में बाईस शिव मंदिर तथा कई बौद्ध बिहार निकले थे। खुदाई का कार्य चलता रहा और इस समय प्रसिद्ध पुरातत्व विशेषज्ञ अरूण कुमार शर्मा की अगुवाई में काम चल रहा है। इस ऐतिहासिक स्थल के उत्खनन में पिछले दिनों आश्चर्य उत्पन्न करने वाला उक्त अस्पताल मिला।

श्री शर्मा ने बताया कि यह एक आधुनिक अस्पतालों के जैसे पूर्ण रूप से सुविधा–सम्पन्न है। महत्वपूर्ण खोज यहाँ मिले शल्य चिकित्सा उपकरण हैं, जिनसे सिद्ध होता है कि भारत में उस समय भी सर्जरी का विज्ञान उन्नत अवस्था में था। खुदाई में एक कलाई की हड्डी भी मिली है जिसमें लोहे की पतली छड़ लगी हुई है। इससे भी यह प्रमाणित होता है कि टूटी अस्थियों को जोड़ने के लिए लोहे की छड़ों का उपयोग उस समय भी सफलतापूर्वक होता था।

अखिल भारतीय आर्य महासम्मेलन का भव्य आयोजन

दिनांक २५ से २७ जनवरी २०१३ में केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के तत्वावधान में विराट यज्ञ एवं सम्मेलन का आयोजन किया गया। नेताजी सुभाष चन्द्र बोस व लाला लाजपत राय की समर्पित भावना से ओतप्रोत होकर राष्ट्रीय एकता व अखण्डता शोभा यात्रा का आयोजन इस अवसर पर किया गया।

–डॉ.अनिल आर्य, मुख्य संयोजक

प्रतिस्वर

आदरणीय अशोक जी

आप द्वारा प्रेषित सत्यार्थ सौरभ प्राप्त हो रही है। बहुत समय से इस पुनीत कार्य के लिए आपको व समस्त अधिकारियों को साधुवाद व शुभकामनाएँ देना चाह रही थी कुछ व्यस्तता के कारण नहीं दे पाई। पत्रिका देखकर व पढ़कर अत्यन्त हर्ष हुआ। प्रभु से प्रार्थना है कि इसका सौरभ यूँ ही विश्व को सुरभित करता रहे। इसमें सौरभ ही विद्यमान रहे। आलोचनाओं व वाद विवादों की दुर्गन्ध से इसे अछूता रखना यही एक छोटीसी प्रार्थना है। अन्य पत्रिकाओं की तरह इसे विवादों का मुद्दा न बनायें।

'क्यों आये इस देश में लाडो' आपका सम्पादकीय अत्यन्त ही मार्मिक लगा। भविष्य में मैं भी अपने विचार व लेख भेजने का प्रयास करूंगी।

बसन्त आया है चहुँ ओर पुष्प सौरभ छाया है।
'सत्यार्थ का सौरभ' तो हर मौसम में महकाया है।

–साध्वी डॉ.उत्तमा यति

सत्यार्थ सौरभ पत्रिका एक ट्रेण्ड सैटर के रूप में उभर कर आयी है। इसके प्रकाशन के पश्चात् आर्य समाज की विभिन्न पत्रिकाओं में भी कलेवर और प्रस्तुतीकरण के संदर्भ में चेतना जाग्रत हुई है, ऐसा मुझे प्रतीत हो रहा है। यह शुभ लक्षण है। आपको बधाई।

–पूरणसिंह, हिरणमगरी, उदयपुर

सत्यार्थ सौरभ पत्रिका संग्रहणीय है और पठनीय तो है ही। शब्द यात्राएँ 'ज्ञानवर्द्धक हैं और भाषा वैज्ञानिक दृष्टि से छात्रोपयोगी भी। आपअपने अथक प्रयास के लिए धन्यवाद के पात्र भी हैं और आदरणीय भी।

– डॉ. रंजना राजदान, देहरादून

सत्यार्थ सौरभ आज के परिप्रेक्ष्य में युवा पीढ़ी शिक्षाविदों के लिए एक प्रेरणादायक–पथप्रेरक का कार्य करती है। सामाजिक उन्नति के लिए ज्ञानवर्द्धक है। उक्त पत्रिका हर स्कूल में वाचनालय में भेजी जाए। स्कूल मद से मँगवाने हेतु प्रयत्न किया जाए।

–रतनलाल जोशी, चाणोद

पत्रिका बहुत ही अच्छे ढंग से प्रकाशित हो रही है। पिछले अंकों में वेद मंत्रों की व्याख्या के साथ चित्र भी प्रकाशित हुए। यह प्रस्तुतीकरण संभवतः आर्य पत्र पत्रिकाओ में पहला प्रयास है, ऐसा मुझे लगता है। यह प्रयास प्रशंसनीय है। ऐसे ही नये नये प्रयोगों से पत्रिका आकर्षक व उपादेय बनेगी। कविताएँ, कार्टून व समसामयिक संदर्भों में जो टिप्पणियाँ प्रस्तुत की गई बड़ी उपयुक्त थीं।

– रामचन्द्र कुमार, प्रधान आर्य समाज, हैदराबाद

युवा वैदिक विद्वान् श्री मोक्षराज आर्य (अजमेर) को 'राजस्थान संस्कृत अकादमी' की महासमिति में राजस्थान सरकार द्वारा नामित किए जाने पर सत्यार्थ सौरभ परिवार की ओर से हार्दिक शुभकामनाएँ।

दयानन्दीय शिक्षानीति के निर्देशक तत्त्व

ऋषि दयानन्द विगत शताब्दी के युगद्रष्टा तथा भविष्यद्रष्टा महापुरुष थे। उनका व्यक्तित्व बहुआयामी था। वे महान् वैदिक, विद्वान्, धर्म-प्रवक्ता, समाज सुधारक, राष्ट्र भक्त तथा भारतीय संस्कृति के रक्षक तो थे ही, देश की भावी पीढ़ी की शिक्षा पद्धति के विधायक महान् शिक्षा शास्त्री भी थे। देश के सार्वजनिक जीवन में अपनी प्रभावशाली भूमिका निभाते हुए स्वामीजी ने अनुभव किया था कि अंग्रेजी शासन द्वारा प्रचलित शिक्षा पद्धति से भारत की बहुमुखी अधोगति तथा पतन का सूत्रपात हुआ है। लार्ड मैकाले ने तो १८३६ में ही अपनी शिक्षा नीति की घोषणा के साथ यह भविष्यवाणी कर दी थी कि ''जिस हिन्दुस्तानी नौजवान ने हमारी शिक्षा नीति के अनुसार अपना अध्ययन किया है, वह आगे चलकर अपने धर्म तथा परम्पराओं से किनारा कर बैठेगा।''

"No Hindu who has received an english education ever remains sincerely attached to his religion"

उसने स्पष्ट रूप में अंग्रेजी शिक्षा पद्धति के उद्देश्यों को घोषित करते हुए कहा था- ''हमारे द्वारा प्रचलित यह शिक्षा नीति इस देश में एक ऐसा वर्ग उत्पन्न करेगी जो रूप, रंग और आकृति में चाहे भारतीय हों, किन्तु आचार, विचार, बुद्धि एवं विश्वासों में पूर्णतया अंग्रेज होंगे।''

"English education would train up a class of persons, Indian in blood and colour, but english in taste, in openions, in morals and intellect"

अपने उपरोक्त घोषित उद्देश्यों के प्राप्त्यार्थ, आंग्ल शिक्षा पद्धति के अधिकाधिक प्रसारार्थ मैकाले ने भारतीयों के मन में स्व-शिक्षा पद्धति, स्व-साहित्य, स्व-संस्कृति के प्रति उपेक्षावृत्ति पैदा करना आवश्यक समझ भारतीय साहित्य व संस्कृति का उपहास उड़ाने में कोई कसर नहीं छोड़ी।

उसने लिखा-

"An single shelf of a good European Library was worth the whole native literature of India and Arabia"

अर्थात् यूरोप के एक अच्छे पुस्तकालय का एक खाना भारत और अरब के सम्पूर्ण साहित्य की तुलना में कहीं अधिक मूल्यवान है।

प्राच्य साहित्य की विभिन्न विधाओं का उपहास करते हुए लार्ड मैकाले ने लिखाः-

''क्या हम उस ज्योतिष की शिक्षा देंगे जिसे पढ़कर अंग्रेजी छात्रावास की लड़कियाँ खिलखिलाकर हसेंगी? क्या ऐसा इतिहास पढ़ाऐंगे जिसमें तीस फीट ऊँचे और तीस हजार वर्ष तक राज्य करने वाले राजाओं का वर्णन है? क्या हम ऐसा भूगोल पढ़ायेंगे जिसमें मधु और नवनीत के समुद्रों का उल्लेख हो।''

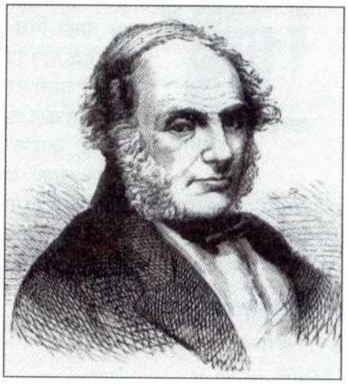

खेद और आश्चर्य का विषय है कि तत्कालीन भारतीय युवकों के साथ-साथ आधुनिक भारत के निर्माता कहे जाने वाले राजा राममोहन राय ने भी मैकाले के इस दुष्प्रचार के दुष्चक्र में फँस अंग्रेजी शिक्षा नीति का भरपूर समर्थन किया। यहाँ तक कि अंग्रेज सरकार द्वारा कलकत्ता में संस्कृत कॉलेज की स्थापना के प्रस्ताव का विरोध भी उन्होंने किया।

किन्तु स्वामी दयानन्द ने शिक्षा को पूर्णतया स्वदेशी आधार प्रदान किया तथा अपना मौलिक चिन्तन प्रस्तुत करते हुए भारत की प्राचीन अध्ययन-अध्यापन प्रणाली के महत्वपूर्ण सूत्रों का उद्भावन किया और हम भारतीयों को आत्मग्लानि के गर्त में गिरने से बचाया। स्वामी दयानन्द के शिक्षा विषयक सिद्धान्त उनके प्रमुख ग्रन्थों में यत्र तत्र विवेचित हुए हैं। सत्यार्थ-प्रकाश के तीसरे समुल्लास का तो शीर्षक ही 'अध्ययन-अध्यापन विधि' है। इसी प्रकार ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका (पठन पाठन विषय), संस्कार विधि (वेदारम्भ प्रकरण), व्यवहार भानु तथा संस्कृत वाक्य प्रबोध (गुरु शिष्य वार्त्तालाप प्रकरणम्), आदि ग्रन्थों में प्रसंगानुसार शिक्षा की विवेचना की गई है। अपनी शिक्षा तथा पाठ विधि को स्वयं क्रियान्वित करने के लिए स्वामीजी ने देश के अनेक प्रमुख नगरों में संस्कृत पाठशालाओं की स्थापना की। यह दूसरी बात है कि योग्य अध्यापकों के अभाव, आर्ष ग्रन्थों के अध्ययन में छात्र समुदाय की रुचि न होने तथा स्वयं के अन्य लोकहित के कार्यों में अत्यधिक व्यस्त रहने के कारण उनके द्वारा स्थापित ये पाठशालायें अपने लक्ष्य को प्राप्त नहीं कर सकीं, तथापि यह स्वीकार करना ही होगा कि स्वामी दयानन्द की स्मृति में स्थापित डी.ए.वी. कॉलेज लाहौर तथा स्वामी श्रद्धानन्द द्वारा पुरातन गुरुकुल शिक्षा को पुनरुज्जीवित करने के प्रयास स्वामी जी की शिक्षा नीति को ही व्यवहारिक रूप

प्रदान करने के प्रयास थे।

दयानन्दीय शिक्षा नीति के निर्देशक तत्त्वों की विचारपूर्वक व्याख्या करने से पूर्व दयानन्दीय शिक्षा का अर्थ प्रस्तुत करते हुए शिक्षा के उद्देश्यों का निर्धारण करना समीचीन होगा।

१) **शिक्षा का शाब्दिक अर्थ**– शिक्षा शब्द संस्कृत की 'शिक्ष्' धातु से निष्पन्न होता है जिसका अर्थ है सीखना। जब हम शिक्षण कहते हैं तो वस्तुतः संस्कृत भाषा के अनुसार इसका अर्थ केवल सिखाना (अध्यापन) नहीं होता वरन् सीखना भी होता है। इसलिए सीखना और सिखाना दोनों अर्थों में शिक्षण शब्द का प्रयोग होता है।

२) **शिक्षा का व्यापक अर्थ**– शिक्षा के व्यापक अर्थ के अनुसार 'शिक्षा' आजीवन चलने वाली सतत् प्रक्रिया है। दूसरे शब्दों में व्यक्ति अपने जन्म से मृत्यु तक जो सीखता, अनुभव करता है, वह सब शिक्षा के व्यापक अर्थ के अन्तर्गत् माना जाता है।

३) **शिक्षा का संकुचित अर्थ**– शिक्षा के संकुचित अर्थ के अनुसार शिक्षा का अभिप्राय बालक को विद्यालय में दी जाने वाली शिक्षा से है अर्थात् बालक को एक निश्चित योजना के अनुसार, एक निश्चित समय से निश्चित समय तक और निश्चित विधियों से निश्चित प्रकार का ज्ञान दिया जाता है।

४) **शिक्षा एक वेदांग है**– छः वेदांगों में शिक्षा पहला वेदांग है। यथा–शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छन्द और ज्योतिष। यहाँ शिक्षा का अर्थ है वेदपाठ में शुद्ध उच्चारण के लिए स्वरों का ज्ञान कराना।

५) **स्वामी दयानन्द की दृष्टि में शिक्षा का अर्थ**– जिससे विद्या, सभ्यता, धर्मात्मा, जितेन्द्रियतादि की बढ़ती होवे और अविद्यादि दोष छूटे उसको शिक्षा कहते हैं। (सत्यार्थ प्रकाश-स्वमंतव्यामन्तव्य प्रकाश)।

शिक्षा के इस अर्थ में शिक्षा शास्त्र के उपर्युक्त सभी अर्थ अर्थात् शाब्दिक अर्थ, व्यापक अर्थ और संकुचित अर्थ तीनों समाविष्ट हो जाते हैं।

साभार-सत्यार्थ दर्शन
सं.- अशोक आर्य

वर्तमान ग्राहकों के लिए रियायती योजना

आपकी सदस्यता को यदि आप पंचवर्षीय सदस्यता में परिवर्तित करते हैं तो चार सौ की बजाय केवल तीन सौ रु. भेज दें तो आपको पंचवर्षीय सदस्य में नामित कर लिया जायेगा। इसी प्रकार अगर आप आजीवन सदस्य बनना चाहते हैं तो बजाय एक हजार रु. के मात्र नौ सौ रु. प्रेषित करने का श्रम करें तो आपको आजीवन सदस्यता सूची में सम्मिलित कर लिया।

आर्यरत्न डॉ. ओमप्रकाश (म्याँमार) स्मृति पुरस्कार

- न्यास द्वारा ON LINE TEST प्रारम्भ।
- वर्ष में तीन बार दिया जावेगा ५१०० रु. का उपरोक्त पुरस्कार।
- आयु, लिंग, योग्यता की कोई बाधा नहीं। आबाल-वृद्ध, नर-नारी, छोटे-बड़े सभी पात्र हैं।
- विश्व भर के लोगों से इस ON LINE TEST में भाग लेने का अनुरोध।

वेबसाइट - www.satyarthprakashnyas.org

मंगलमय हो नव संवत्सर

स्वर्णिम आशाओं की कलिका,
खिले धरा के शुभ प्रांगण में।
नव आह्लाद भरे वसुधा के,
आँचल में व कण–कण में।
पुनः मनुजता के तत्वों का
सुन्दर–शिव–सत हो उत्कर्ष
मंगलमय हो संवत–वर्ष।।१।।

विश्व–पटल का नष्टप्राय हो,
आतंकी घनघोर कुहारसा।
शान्ति–सुखों की समरसता की,
पूरी हो जन–जन अभिलाषा।
दानवता हो जाय पराजित
बढ़े असीमित हर्ष सहर्ष।
मंगलमय हो संवत–वर्ष।।२।।

विकसित हो, देवत्व धरा पर,
असुर वृत्तियों का हो नाश।
नव उत्साह तथा नव–चेतन,
का फिर जगे यहाँ मधुमास।
विस्तृत हो फिर आर्ष–मनीषा
यही हमारा हो निष्कर्ष
मंगलमय हो संवत–वर्ष।।३।।

अनाचार का, कदाचार का,
हो निश्चित सम्पूर्ण समापन।
स्वार्थ को त्याग सभी हम
अपनाएँ मिलकर अपनापन।।४।।
शक्तिपुञ्ज बन उभरे भू पर
दिव्य हमारा भारतवर्ष
मंगलमय हो संवत–वर्ष।

- स्व. राधेश्याम आर्य, विद्या वाचस्पति
(साभार-ओम् सुप्रभा)

श्री राम सेतु

-डॉ. सुब्रह्मण्यम स्वामी

श्री स्वामी का यह लेख कुछ वर्ष पूर्व लिखा गया था जब श्री स्वामी की याचिका पर माननीय उच्चतम न्यायालय ने 'सेतु समुद्रम्' योजना पर रोक लगाते हुए भारत सरकार से अन्य विकल्प तलाशने को कहा था। सरकार ने डॉ. आर. के. पचौरी समिति गठित की जिसने हाल ही में अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत कर सेतु समुद्रम् योजना को अव्यवहारिक बताया है। पर सरकार अपनी जिद पर अड़ी है। रामसेतु मात्र हिन्दुओं की आस्था नही वरन् प्राचीन मानवता के ज्ञान-विज्ञान सम्पन्न होने का सबूत होने से Word heritage है जिसकी हर कीमत पर रक्षा की जानी चाहिए।

-सम्पादक

श्रीरामसेतु जिसे कभी कभी सेतुबंध भी कहा जाता है, राष्ट्र का एक प्रतीक है, क्योंकि भारत के आराध्य मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम के निर्देश पर इसे बनाया गया है। इस प्रकार श्री रामसेतु, जिसके ऊपर से श्री राम की सेना समुद्र के पार गई थी न केवल पवित्र है बल्कि जनता इसे एक सांस्कृतिक निधि, एक तीर्थ स्थान और एक दिव्य क्षेत्र मानती है। भगवान श्री राम की शासन की कला को रामराज्य कहा जाता है, जिसका नाम लेकर महात्मा गांधी ने स्वतंत्रता संग्राम के दौरान जनता को संग्राम हेतु तैयार किया था। श्रीरामसेतु रामेश्वरम् द्वीप के पूर्वी बिन्दु पर स्थित धनुष्कोटि को श्रीलंका के तलाई मन्नार तक के जलडमरूमध्य को जोड़ने वाला सेतु है। यह उत्तर में बंगाल की खाडी में स्थित पाक उथल पुथल वाले जलडमरूमध्य को सेतु के दक्षिण में मन्नार की खाड़ी के शांत और गंभीर जल से अलग करता है। समुद्र के नीचे उभरे हुए भाग के ऊपर १.५ से २.५ मीटर मोटा कोरलों और शैल का क्षेत्र है, जो समुद्र में कहीं-कहीं दिखाई पड़ता है।

अमरीका की 'नेशनल ऐरोनॉटिक्स एंड स्पेस एजेन्सी' (नासा) तथा भारत सरकार के अंतरिक्ष मंत्रालय की राष्ट्रीय दूरसंवेदी एजेन्सी ने उपग्रह से लीं प्रकाश छवियां प्रकाशित की हैं जिससे सेतु जैसी रचना की मौजूदगी साफ तौर पर प्रमाणित होती है। तथापि भारत सरकार श्री रामसेतु के मध्य में से तीन सौ मीटर चौड़ी एक नहर काटना चाहती थी, जो कि मन्नार की खाड़ी को पाक जलडमरूमध्य से जोड़ती तथा समुद्र की पैंदी पर जलयान को अवजल नहर होती जिससे हिन्द महासागर के तटीय देशों में स्थित बंदरगाहों से आने वाले जलयान श्रीलंका द्वीप का चक्कर लगाए बिना बंगाल की खाड़ी में जा सकते थे। यह जलयान नहर ३०००० डी डब्ल्यू.टी से कम के छोटे जलयानों लिए ही काम करती जबकि हिन्द महासागर में जाने वाले ऐसे जलयानों की संख्या का मात्र पाँच प्रतिशत ही है। अन्य १५ प्रतिशत जलयानों को फिर भी श्री लंका का चक्कर लगाकर ही यात्रा जारी रखनी होती है जैसाकि वे पहले से ही कर रहे हैं।

सरकार की जिद परास्त

ऐसी नहर का निर्माण पाँच अन्य वैकल्पिक मार्गों या विभिन्न विशेषज्ञ समितियों द्वारा अनुशंसित सरेखणों के आधार पर हो सकता था, जिससे श्री रामसेतु को काटने की आवश्यकता नहीं पड़ती। ये मार्ग मेरी पुस्तक 'रामसेतुः ऐ सिम्बल आफ नेशनल यूनिटी' हरानंद, नई दिल्ली २००८, में वर्णित हैं। किन्तु सरकार उसी रास्ते को अपनाने की जिद पर थी, जिसमें श्री रामसेतु को काटकर उस पवित्र सेतु को नष्ट करना पड़ रहा था। इससे यह पता लगता है कि सरकार का इरादा दुर्भावनापूर्ण था। इसलिए जगद्गुरु शंकराचार्यों के अनुरोध, विश्व हिन्दू परिषद् के समर्थन और डॉ.एस.कल्याण रमन् तथा वी.सुन्दरम् के अनुसंधानों से सहायता लेकर मैंने इस परियोजना के विरुद्ध न्यायालय में एक याचिका दायर की। ३१ अगस्त २००७ को उच्चतम न्यायालय ने इस परियोजना के द्वारा श्रीरामसेतु को कोई क्षति न पहुँचे इसके लिए स्थगन आदेश दे दिया। इस प्रकार पवित्र सेतु बच गया।

उच्चतम न्यायालय में श्री रामसेतु को क्षति पहुँचाने वाली परियोजना के विकल्प में स्वेच्छाचारिता, अनौचित्य, दुर्भावना, अवैधानिकता और आपराधिकता के आधार पर मेरे ११ महीने के तर्कों के पश्चात् ३१ जुलाई २००८ को तत्कालीन

न्यायमूर्ति के.जी बालकृष्णन ने जलयान नहर के लिए अन्य सरैखण का चयन करने का आदेश सरकार को दिया। सरकार ने इस आदेश के अनुपालन हेतु डॉ. आर.के.पचौरी के अधीन एक समिति बनाई है जो इसकी व्यावहारिकता से जाँच करके एक विकल्प सुझाएगी। समिति की रिपोर्ट की प्रतीक्षा है।

वाल्मीकि रामायण में श्रीरामसेतु का विस्तृत वर्णन आता है। श्रीराम ने वास्तुकार नल और नील को कार्य सौंपा था। शैलों और पत्थरों का कम से कम इस्तेमाल हो, इस दृष्टि से उन्होंने कटक के उठे हुए भाग का लाभ उठाया और कम सघन किन्तु गठे हुए कोरलों और पत्थरों का इस्तेमाल किया जिससे इन्हें अधिक दूरी तक आसानी से ढोया जा सके और ये मानवों के दाब को सहने में भी समर्थ हो सकें तथा सागरीय बल में उखड़ें भी नहीं। श्रीरामसेतु ने ऐसी टूट-फूट को विगत हजारों वर्षों के दौरान सहन किया है और अभी भी पूर्ववत् है। थोड़ी सी मरम्मत कर इस सेतु को श्रीलंका तक जाने के लिए पहले की तरह एक मार्ग का रूप दिया जा सकता है।

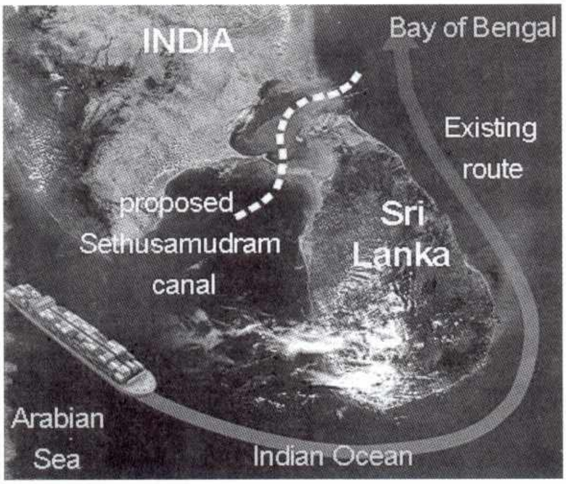

प्राचीन स्मारक

भारतीय भूगर्भ सर्वेक्षण के पूर्व निदेशक श्री एस.बद्रीनारायण के उस समय के अनुसंधानों से जब वे एन.आई.ओ.टी में परामर्शदाता थे, स्पष्ट होता है कि **रामसेतु एक प्राकृतिक रचना नहीं है, बल्कि निर्मित सेतु है, जो पुराना है।** इसलिए इसकी स्वतः एक ऐसा पुराना स्मारक होने की अर्हता हो जाती है जिसकी रक्षा प्राचीन स्मारक और पुरातत्वीय स्थल और अवशेष अधिनियम १९५८ के अधीन होनी ही चाहिए। किन्तु भारतीय भूगर्भ सर्वेक्षण या एन.आई.ओ.टी से परामर्श लिए बिना ही भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण के नियंत्रक संस्कृति मंत्रालय ने उच्चतम न्यायालय में में आनन फानन में एक शपथ पत्र दायर कर दिया जिसमें यह लिखा गया कि सरकार की जानकारी में ऐसी कोई सूचना या अध्ययन होने की जानकारी नहीं है कि रामसेतु मानव निर्मित है।

तमिलनाडु के तत्कालीन मुख्यमंत्री एम. करुणानिधि और उनके सहायक केन्द्रीय नौवहन मंत्री टी.आर.बालू इसके बावजूद जनता को यह बताते रहे हैं कि श्री रामसेतु काल्पनिक है, श्रीराम एक कपोल कल्पित व्यक्ति हैं। यह कल्पना की उड़ान है और विद्यमान सेतु रेत की एक प्राकृतिक रचना है। सेतु समुद्रम जलयान नहर परियोजना की आर्थिक और पर्यावरणीय व्यावहारिकता को देखते हुए काल्पनिक कहानियों पर आधारित शिकायतों के कारण इसे बंद नहीं किया जाना चाहिए।

पर्यावरणीय आपदा को आमंत्रण

पर्यावरणीय मुद्दों पर इतना कहना पर्याप्त होगा कि पर्यावरण और वन मंत्रालय, भारत सरकार ने अपने ८ अप्रेल १९९९ के पत्र में भूतल परिवहन मंत्रालय को अपना अभिमत स्पष्ट कर दिया था कि 'सेतुसमुद्रम जलयान नहर परियोजना' को पूरी तरह समाप्त कर देना चाहिए क्योंकि उक्त परियोजना एक पर्यावरणीय आपदा होगी। यह अभिमत सन् १९९८ की 'नीरो' (राष्ट्रीय पर्यावरण अनुसंधान संस्थान) की रपट में किए गए विश्लेषण पर आधारित था। तो भी सन् २००१ में मंत्रालय ने किन्हीं नवीन आँकड़ों के बिना ही अपना अभिमत बदल दिया और इस प्रकार उक्त नहर परियोजना पुनर्जीवित हो गई। इस कलाबाजी का कोई स्पष्टीकरण नहीं दिया गया और प्राचीन स्मारक एवं पुरातत्वीय स्थल और अवशेष अधिनियम के अंतर्गत इसे एक राष्ट्रीय स्मारक घोषित न करने का भी एक कोई कारण नहीं बताया गया।

सेतुसमुद्रम जलयान नहर परियोजना को कार्यान्वित करने का सरकार का निर्णय श्री करुणानिधि एवं सोनिया गाँधी जैसों के हिन्दू विरोधी रुख को पुष्ट करते हैं। इसलिए जब मैंने इसे चुनौती दी तब यह न्यायालय में ठहर न सके। वस्तुतः यह परियोजना एक पर्यावरणीय आपदा तो है ही, यह आर्थिक रूप से अव्यवहार्य है और राष्ट्रीय सुरक्षा के प्रति एक जोखिम भी। 'रामसेतुः ए.सिम्बल आफ नेशल यूनिटी'(हरानंद,नई दिल्ली २००८) पुस्तक में इन सब दिशाओं में तर्कों का विस्तृत ब्यौरा दिया गया है।

वाल्मीकि रामायण के अनुसार लक्ष्मण जी ने लंका विजय के बाद भगवान श्रीराम से यह पूछा था कि लंका में ही क्यों न बसा जाए?जिसे उन्होंने जीत लिया था जोकि अयोध्या की तुलना में अधिक सुन्दर और अधिक समृद्ध थी और सीता जी भी पहले से ही वहाँ थीं। तभी श्रीराम ने उत्तर दिया-

स्वर्णमयी लंकाऽपि न मे लक्ष्मण रोचते,

जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी'

जिसका अनुवाद करते हुए महर्षि अरविन्द ने बताया है,'हे लक्ष्मण यह सोने की लंका मुझे नहीं लुभाती क्योंकि माँ और मातृभूमि स्वर्ग से भी बढ़कर हैं। ये अमर देशभक्तिपूर्ण शब्द जो श्री राम ने कहे थे, राष्ट्र स्मृति में तब तक रहेंगे, जब तक हिन्दुस्तान एक जीवन्त सभ्यता के रूप में रहेगा। इस प्रकार रामायण श्री राम के चरित्र और कार्यों की एक विवरणिका है और उसमें उन शासनसिद्धान्तों का प्रतिपादन हुआ है जिनको यदि ठीक तथा निष्ठापूर्वक कार्यान्वित किया जाए तो वे आज भी प्रासंगिक हैं।

भारत में आध्यात्मिक आभा की गहन पृष्ठभूमि में उच्चतम न्यायालय के न्यायमूर्ति के.टी.थामस ने ५ अप्रेल २००७ को कहा,'रामसेतु को तोड़ा नहीं जाना चाहिए।' भारत के राष्ट्रपति से पद्मभूषण का अलंकरण प्राप्त करने के बाद उन्होंने अलंकरण समारोह में एक प्रशन के उत्तर में पत्रकारों से कहा,'ऐसी परियोजना में निर्णय न केवल भू-गर्भीय प्रभावों के अध्ययन पर आधारित होते हैं, बल्कि जनता की धार्मिक भावनाओं को भी ध्यान में रखना आवश्यक होता है। भारत सरकार को भारत की जनता की धार्मिक भावनाओं का आदर करना चाहिए। भारत भूमि में धार्मिक भावनाओं के आदर की परम्परा है इसलिए मेरा यह निश्चित मत है कि श्री रामसेतु को तोड़ा नही जाना चाहिए।

भगवान श्री राम में भारत की जनता की अतुल्य आस्था को ध्यान में रखते हुए श्री रामसेतु को विधितः प्राचीन स्मारक घोषित किया जाना चाहिए और एक सम्मानित सांस्कृतिक निधि की तरह उसकी रक्षा और अनुरक्षण होना चाहिए। चूंकि अब गंगा एक राष्ट्रीय सांस्कृतिक निधि घोषित की गई है जिसके भी वैसे ही कारण हैं इसलिए श्रीराम सेतु को उसी प्रकार का स्तर न दिए जाने का कोई आधार नहीं है।

किसी भी दशा में श्रीरामसेतु को क्षति नहीं पहुँचाई जा सकती और उसे तोड़ा भी नहीं जा सकता, क्योंकि तब यह एक आपराधिक कृत्य होगा। उच्चतम न्यायालय ने एस.वीर.भद्रन शेट्टियार बनाम पी.वी.रामस्वामी नायकर वाद (ए.आई.आर. १९५८ उच्चतम न्यायालय १०३२ से १०३५ पृष्ठ) में अपने निर्णय में यह लिखा है-कोई भी वस्तु भले ही वह कितनी ही मामूली या अपने वास्तविक मूल्य में अकिंचन हो यदि उसे व्यक्तियों का कोई समूह पवित्र मानता है तो वह दंडात्मक खंड (भारतीय दंड संहिता का २९५) के अंतर्गत आएगी। यह बिल्कुल आवश्यक नहीं है कि उस वस्तु को पवित्र माने जाने हेतु वस्तुतः पूजी भी जाती हो। कोई भी वस्तु भले ही उसकी पूजा न की जा रही हो तो भी व्यक्तियों के एक समूह द्वारा उसे पवित्र माना जा सकता है। यह स्पष्ट है कि नीचे के न्यायालय पूर्वाग्रहग्रस्त थे कि उन्होंने उन व्यक्तियों के समूहों की जिससे शिकायतकर्ता के संबंध में होने का दावा किया गया है,धार्मिक भावनाओं को बिल्कुल सरलता से नजरअंदाज कर दिया। उक्त खंड का भावार्थ भिन्न-भिन्न मजहबी विचारों या सम्प्रदायों के व्यक्तियों की धार्मिक भावनाओं को मान्यता देना है। ऐसे मामलों में न्यायालय को बहुत चौकन्ना होना चाहिए और भिन्न भिन्न विश्वासों के व्यक्तियों के भिन्न भिन्न वर्गों की मजहबी भावनाओं और विचारों का उचित ध्यान रखा जाना चाहिए, भले ही वे न्यायालय की राय में उन विश्वासों के प्रति निष्ठा रखते हों या न रखते हों, भले ही वे तर्कसम्मत हों या अन्यथा हों।

इस निर्णय के पश्चात् श्रीरामसेतु को एक अप्रतिम सांस्कृतिक निधि के रूप में रक्षणीय न माने जाने का कोई आधार नहीं है। सेतु को क्षति पहुँचाना या तोड़ना भारतीय दंड संहिता के खंड २९५ के अंतर्गत एक आपराधिक संज्ञेय अपराध है। यहाँ तक कि यदि आज श्रीरामसेतु के श्री राम द्वारा ६००० वर्ष से भी अधिक पहले बनाए जाने का कोई स्पष्ट वैज्ञानिक प्रमाण न भी हो तो भी निकट भविष्य में विज्ञान के विकास के साथ श्रीरामसेतु की वास्तविकता प्रमाणित हो सकती है। उदाहरण के लिए सरस्वती नदी और द्वारका नगर पंथनिरपेक्षतावादी इतिहासकारों द्वारा काल्पनिक बताए जाते थे, किन्तु आज आधुनिक विज्ञान आधारित पुरातत्व ने उनकी विद्यमानता को सिद्ध कर दिया है। रामसेतु भी भारत की ऐसी ही प्राचीन धरोहर और सांस्कृतिक निधि है।

(साभार- जनज्ञान मासिक)

सत्यार्थप्रकाश प्रचार सहयोग निधि

☒सत्यार्थ प्रकाश से उत्कृष्ट कोई ग्रन्थ नहीं जिसके प्रकाशन में आपकी पुण्य दान राशि का प्रयोग हो। सत्यार्थ प्रकाश प्रचार हेतु,कम राशि में अधिक संख्या में यह महान् ग्रन्थ जन-जन के हाथों में पहुँच सके,एतदर्थ निम्न योजना निर्मित की गई है:-

☒सत्यार्थ प्रकाश (मानक संस्करण) की द्वितीय आवृत्ति छपने में है। कृपया निम्नानुसार सहयोग कर लागत मूल्य से आधी कीमत में सत्यार्थ प्रकाश का दिया जाना सुनिश्चित करें। आपके द्वारा सहयोगार्थ प्रदान की गई राशि के समक्ष अंकित प्रतियों पर आपका अथवा आपके किसी प्रियजन का चित्र ग्रन्थ पर दिया जावेगा।

राशि	प्रतियों की संख्या	राशि	प्रतियों की संख्या
एक लाख रु.	दस हजार	७५०००	७५००
५००००	५०००	२५०००	२५००
१००००	१०००	इससे स्वल्प राशि देने वाले दानवीरों के नाम ग्रन्थ में अंकित किये जायेंगे।	

☒आपका दान आयकर अधिनियम की धारा ८० जी के अंतर्गत करमुक्त होगा। राशि न्यास के नाम ड्राफ्ट या चैक द्वारा भेजें अथवा यूनियन बैंक ऑफ इंडिया, उदयपुर खाता क्रमांक ३१०१०२०१००४१५१८ में जमा कर सूचित करें।

निवेदक

भवानीदास आर्य, मंत्री-न्यास — भंवरलाल गर्ग, कार्यालय मंत्री — डॉ.अमृत लाल तापड़िया, उपमंत्री-न्यास

मधुमेह (डायबिटीज) - कारण व उपचार

गतांक से आगे......

विमल वधावन 'योगाचार्य'

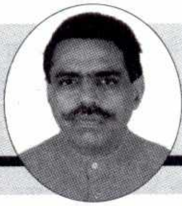

३. **आचरण दोषः**- गन्दे उपन्यास पढ़ना, सैक्स और हिंसा से युक्त फिल्में देखकर हमारे मन पर वैसा ही असर होने लगता है। मस्तिष्क पर होने वाले उस असर की तरंगे सारे शरीर के अंगों और तन्त्रों पर भी अपना प्रभाव डालती हैं। परिणामतः भोजन से रस बनना तथा अन्य धातुएँ जैसे वीर्य निर्माण तक की प्रक्रिया दुष्प्रभावित हो जाती हैं। ऐसे कार्यों में लिप्त होने की सम्भावनाएँ भी बढ़ जाती है। सैक्स और हिंसा के विचारों के कारण भी पाचन तंत्र खराब हो जाता है। जिससे इन्सुलिन निर्माण कम हो जाता है।

जब व्यक्ति किसी विरोधी स्थिति का मुकाबला करते हुए अपने मस्तिष्क को शान्त नहीं बनाए रख पाता और गुस्सा, तनाव, चिन्ता आदि करने लगता है तो ऐसी स्थितियों से निपटने के लिए हमारी किडनी के ऊपर दो टोपीनुमा ग्रंथियाँ (Adrenal Glands) अपना रस निकालती है। क्योंकि गुस्सा तनाव आदि आपात स्थिति से निपटने वाले ऐडरेनेलिन के अधिक निकलने से शरीर में ऊर्जा की खपत अधिक होती है और जब ऐसी परिस्थितियाँ लगातार कई दिन, महीने, वर्षों तक आपकी जीवनशैली का रूप धारण करने लगती है तो इन्सुलिन की माँग अधिक हो जाती है। इन्सुलिन अधिक मात्रा में निकालने के लिए पैनक्रियाज़ को दिन-रात मेहनत करनी पड़ती है। परिणामतः वे थक जाते हैं और अन्ततः कार्य करना बन्द कर देते हैं। जब इन्सुलिन का निर्माण ही बन्द हो गया तो सामान्य कार्बोहाईड्रेट जैसे गेहूँ, चावल, मीठे फलों की मिठास भी ग्लूकोज के रूप में रक्त पर बोझ बन जाती है। देखा गुस्से और तनाव का कमाल-करो, भोले-भाले बच्चों पर गुस्सा; करो, सड़क पर चलने वाले उन लागों पर गुस्सा जिनसे आपका कोई रिश्ता ही नहीं है; करो, तनाव धन के नुकसान का या अधिक कमाने का जो अन्ततः शूगर जैसी बीमारियों पर ही खर्च करना है।

४. **कार्यशैली दोषः**- चीन, जापान के एक आदिवासी समुदाय में जब बच्चा पैदा होता था तो पहली रात उसे कमरे के बाहर खुले में सुलाया जाता था। उसके पीछे तर्क यह है कि पैदा होते ही उसका शरीर प्रकृति के साथ रहने का अभ्यस्त हो जाए। भारत में भी कुछ लोगों में यह प्रथा थी कि पैदा हुए बच्चे को पहले ही दिन गंगा के बर्फ से भी ठण्डे पानी में एक डुबकी लगवा दी जाती थी। बेशक इसे श्रद्धा नाम दे दिया गया हो, परन्तु वैज्ञानिक कर्म यह था कि बच्चे का शरीर पहले ही दिन प्रकृति के साथ हिल मिल जाए।

जून २०१० में ही मैंने अपने पड़ोस में एक महिला को एक सप्ताह पूर्व पैदा हुए बच्चे को कुर्सी पर लिटा कर सुबह ६ बजे धूप सिकाते हुए देखा। उसका भी तर्क यही था कि गर्मी के मौसम में गर्म प्रकृति के साथ हिल-मिल जायेगा।

आइए, अब एक नजर आधुनिक कार्यशैली पर डालें। आज पंखों, कूलरों से लेकर एयरकंडीशनर तक का युग है। लोग प्रकृति से हिलने-मिलने के स्थान पर इन्हीं मशीनों से हिल मिल गए हैं। योग आसन, प्राणायाम का तो सामान्यतः लोगों को क, ख, ग, भी नहीं पता। कुछ लोग इसे फैशन अर्थात् शरीर की सुन्दरता के नाम पर करते हैं। साईकल चलाना अब लगभग समाप्त हो चुका है। एक किलोमीटर दूर भी जाना हो तो रिक्शा, ऑटो की आवश्यकता है। जरा सोचिए, सारा दिन पसीना कब आता है आपको। पसीना आने से शरीर के रोम-रोम में जमा गन्दगी बाहर निकलती है। मल बाहर निकलने से त्वचा नरम भी हो जाती है और रंग में भी निखार आ जाता है।

पसीना अधिक आने से शरीर में रक्त संचार अच्छा चलने लगता है और ग्लूकोज का स्तर स्वतः ही घट सकता है।

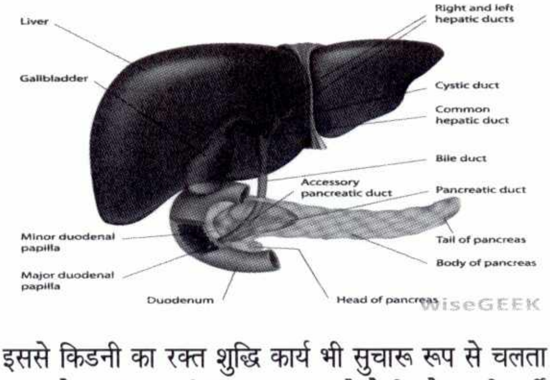

इससे किडनी का रक्त शुद्धि कार्य भी सुचारू रूप से चलता रहता है। क्या आप विश्वास कर सकते हैं कि मैं तपती गर्मी अर्थात् अप्रैल, मई, जून के दिनों में भी सारा दिन, सारी रात बिना पंखे के ही जीवन यापन करता रहता हूँ। आज का

मानव अपनी छोटी-छोटी आवश्यकता की पूर्ति के लिए नौकरों पर आश्रित होता जा रहा है। व्यापारियों के सहारे जीवन यापन चल रहा है। परिणामस्वरूप खुद मेहनत करके अपने कार्य स्वयं करने की परम्परा समाप्त होती जा रही है। कभी घर पर किसी महिला ने आटा नहीं पीसा, जमीन पर बैठकर खाना बनाने की परम्परा समाप्त हो गई, चौकी आसन पर बैठकर खाना खाने की आदत नहीं रही, सिल-पत्थर पर पुदीने की चटनी नहीं बनानी पड़ती आदि कितने ऐसे काम हैं जो कलयुग अर्थात् मशीनयुग ने हमारे जीवन से छीन लिए। वही कार्य शरीर को चुस्त-दुरुस्त रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते थे। आपका आलसी, आरामपरस्त जीवन ही तो शरीर के अंगो को सुस्त कर इन्सुलिन निकालना बन्द कर देता है या कम कर देता है जिससे शरीर में ग्लूकोज स्तर बढ़ जाता है।

३. **औषध दोषः-** मैने अपने जीवन की १८-२० वर्ष की अवस्था के बाद से आज तक अंग्रेजी औषधि की एक बूँद या एक गोली भी शरीर में प्रवेश नहीं करने दी। यदा-कदा कोई अनियन्त्रित शारीरिक समस्या पैदा हो भी गई तो सदैव ईश्वर ने अपने इस पुत्र पर कृपा की है क्योंकि मैंने अपना जीवन यथा सम्भव योग और प्राकृतिक तरीके से ही चलाने की कोशिश की है।

अंग्रेजी औषधियाँ बड़े भयंकर कैमिकल्स के साथ तैयार की जाती हैं जो किसी एक लक्षण को दूर करने में सक्षम अवश्य होती हैं परन्तु शरीर के अन्दर कई दूसरे नुकसान कर देती हैं। आज का भोला-भाला, अज्ञानी, मूर्ख इन्सान एक लक्षण के इलाज के लिए एक से अधिक अन्य खराबियाँ कर बैठता है इस अंग्रेजी औषधि के सहारे।

इंग्लैण्ड से हमारे भ्राता डॉ. जयदीप वधावन ने अंग्रेजी औषधियों में शामिल किए जाने वाले कैमिकल्स के बारे में एक अंग्रेज डाक्टर की ही लिखी पुस्तक भेजी- Murder, Magic And Medicine अर्थात् कातिल, जादूगर और औषधि। इस पुस्तक का सार यह है कि किसी जमाने में भारत में तीर कमानों और दूर से मार करने वाले छुरों के कोनों पर जहरीले पदार्थ लगाए जाते थे जो व्यक्ति के शरीर में प्रवेश करके उसकी हत्या कर सकते थे। इन्हीं जहरीले पदार्थों के साथ कुछ लोग अपना जादूगरी का धन्धा चलाते थे और अब वैसे ही जहरीले पदार्थ औषधियों के निर्माण में प्रयोग किए जा रहे हैं।

इस पुस्तक में यह सिद्ध किया गया है कि जिन कैमिकल्स को हम औषधि समझ कर खाते हैं देखने में हमें यह जादू लगता है कि उन्हें खाने से हमारे रोग के लक्षण समाप्त हो गए और हम उन्हें औषधि कह रहे हैं परन्तु वे वास्तव में हमें मारने का काम करते हैं धीरे असर करने वाले विष की तरह। इसलिए उन कैमिकल्स को ही Murder, Magic And Medicine तीनों नाम दिए गए हैं। अंग्रेजी औषधियों के साईड प्रभाव तो भारतवासियों और अन्य गर्म स्थलों पर बसने वाले देशों के निवासियों के लिए विशेष रूप से पैदा हो जाते हैं।

ये औषधियों हमारे शरीर से पौष्टिक रसों में विद्यमान धातुओं को नष्ट करके शरीर के अंगों में बहुत कमजोरी पैदा कर देती है। जिससे भोजन की पाचन क्रिया तथा भोजन से उत्पन्न रसों के अवशोषण का मार्ग अवरुद्ध हो जाता है। इससे सर्वप्रथम रक्त में ग्लूकोज स्तर बढ़ता है, इन्सुलिन की मात्रा कम पड़ जाती है।

क्रमशः ....

तत्त्वमसि

वेद विद्या के महारथ सूर्य थे,
सत्य के स्वातत्र्य के तुम सूर्य थे।
सहस्राब्द पुरुष म. स्वा. दयानन्द सरस्वती
अखिल भुवने भास्वर मणि
शिव–शंकर तुम बने काल के चषक हलाहल पीकर।
हुए अमर ऋषिराज! सुध सुपान धरा को देकर।।
महाव्रती संन्यासी मुनिवर, ब्रह्मचर्य व्रतधारी।
नैष्ठिक निर्भय सिंहपुरुष सम,योद्धा परमोदारी।।
कृण्वन्तो विश्वं आर्य हेतु,भू पर अवतरित हुए थे।
गो–नारी–विधवा–दलितोद्धार हेतु जन्मे थे।।
कर्म क्षेत्र में जब ऋषि उतरे, रहा विधर्मी शासन।।
चले मनुस्मृति संविधान,आर्यों का लाने को शासन।।
कालजयी सत्यार्थ प्रकाश रच, वैदिक ज्ञान दिया था।
संस्कार विधि से,संस्कारों को भी सम्मान दिया था।
दश नियमों से निर्देशन कर, धर्म–कर्म फैलाया ।
शास्त्रार्थों के दिव्य अस्त्र से, भ्रम को दूर भगाया।।
सत्य सनातन धर्म व्यवस्था, जगती पर फैलाई।
ओ३म् ध्वजा ले अखिल विश्व में, वैदिक क्रांति जगाई।।
अज्ञान, अविद्या, अंधकार के, नाशक बनकर प्रकटे।
स्वतंत्रता घोषक स्वराज्य के, मंत्र प्रदाता तुम प्रकटे।।
वर्णाश्रम का बोध मनुजता के हित में दर्शाया।
हो आदर्श समाज–राष्ट्र, श्रीमनु का सिद्धान्त बताया।
घर–घर वेद ऋचायें गूँजें लोकतंत्र हो रक्षित।
सर्वेभवन्तु सुखिनः शासित हो निजता रहे उपेक्षित।।
विद्या भास्कर दयानन्द! अतुलित प्रतिदान तुम्हारा।
वेद ज्ञान के ज्योतिस्तम्भ! सुश्लोकित कर्म तुम्हारा।।
सिद्धि विभूषित दयानन्द! तुम वैदिक युग सृष्टा थे।
पांखडों से पीडित जग के, श्रेय मार्ग दृष्टा थे।।
दीपावली के स्नेह–दीप, आत्म ज्योति से चले जलाकर।
वसुन्धरा को अभिसिंचित कर,'वैदिक' ज्ञान सुधाकर।।
ऋषिवर! को शत्–शत् प्रणाम, भावों से भरे हृदय से।
भारत भूमि के भव्य भाल पर,भानु भास्वरित जैसे।।
–वेद प्रकाश गर्ग, घिरोर मैनपुरी

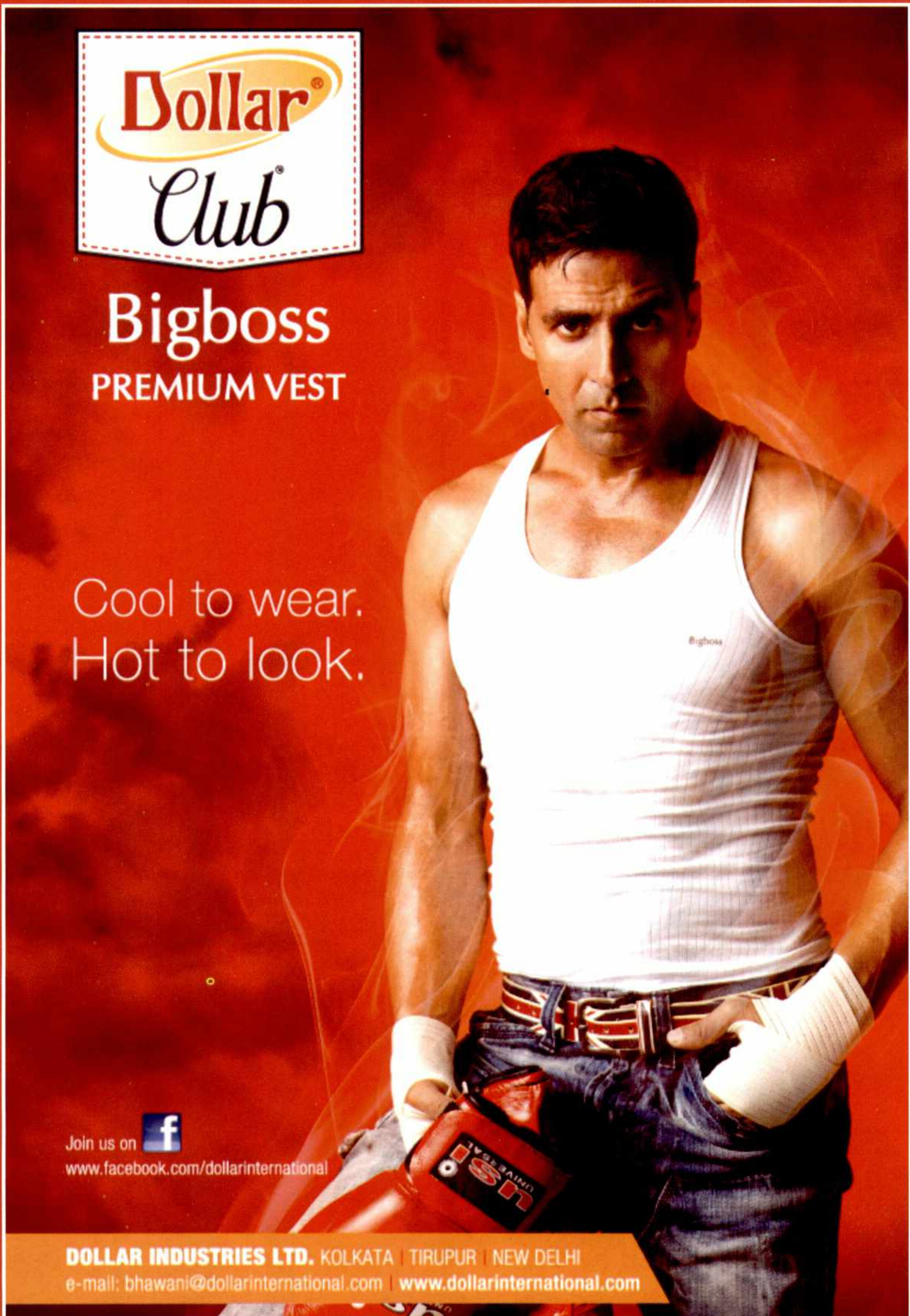
Dollar
Club
Bigboss
PREMIUM VEST
Cool to wear.
Hot to look.
Join us on
www.facebook.com/dollarinternational
DOLLAR INDUSTRIES LTD. KOLKATA | TIRUPUR | NEW DELHI
e-mail: bhawani@dollarinternational.com | www.dollarinternational.com

RNI Registration No. RAJHIN/2012/47777 APRIL-2013 Postal Registration No. RJ/UD/29-107/2013-2015

मंगलमय हो नव संवत्सर

विकसित हो, देवत्व धरा पर,
असुर वृत्तियों का हो नाश।
नव उत्साह तथा नव-चेतन,
का फिर जगे यहाँ मधुमास।
विस्तृत हो फिर आर्ष-मनीषा
यही हमारा हो निष्कर्ष
मंगलमय हो संवत-वर्ष॥3॥

एक अरब छानवे क्रोड
कई लाख कई सहस्र
वर्ष जगत् की उत्पत्ति और
वेदों के प्रकाश होने में हुए हैं

सत्यार्थ प्रकाश पृ.-२२६

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित तथा कार्यालय श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास नवलखा महल गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर-313001 से प्रकाशित, सम्पादक-अशोक कुमार आर्य

COPL/11053